(ह)

M-102

(31)

समकालीनप्रति

$30\frac{1}{2} \times 15$

वैष्णवमहात्म्य सार-चंद्रिका (रचना-१८३७)

(किशोरीअलीकृत)

पत्र-३२

संवत-१८४५

(वैष्णवपोकरदासपाडली)

कीटकाटित

पत्र १से १६ एवं २६ से ३२

॥वैष्णवमाहात्म्यसारचंद्रिका॥

॥१॥

गु

लाहै

लाख्याहि

पुसागरतै

विरहि

म॥म

ारिकै चि

ः प्रेमाऽमलको म

जगन्नाथकः ॥१॥ चौपई

सबतैं उत्तम सोई कहावै।

भुक्ती ज्ञेयः सर्वोत्तमोत्तमः ॥१॥

रि नै भक्ति न जाही॥ सुपच अधम सो

लुन भक्ति विहीन तक्छ द्विजो पि श्वप

है होई॥ सो मोकों प्रिय लागत नाही॥

॥श्रीरामायनमः॥श्रीजानकीवल्लभायनमः॥श्रीरामानुजायनमः॥श्री
अथसारचंद्रिकालिख्यते॥सोरठा॥जयजयभानुकुमारिजयराधाअ
प्यारीपालकुदीनजन॥१॥कीरतिललीउदारःकरुनानिधिजसरावरौ॥छायोज
नी॥२॥गोरीरूपनिधानःप्रीतमकीप्राणेस्वरी॥तुमहोपरमसुजानःकरीयकांनउ
रासिःजयतिनिकुंजविहारिणी॥कीजेनिजपदरासिःकुंवरिकिशोरीअलीकों॥४॥स्वा
यरहोतिकुलोकमें॥अवश्रीवनकोवासललीअलीकोंदीजिये॥५॥जयवृंदावनधा
हिनी॥सवविधिपूरनकांमःकरनहरनवाधासकल॥६॥जयललितेसुकुमारिःजय
मेरीओरनिहारिःहाहाछमिअपराधकों॥७॥सरणागतकीप्रतिपालःराधिकाईरसिकज
हकालःदरशदीजियेवेगिमोहि॥८॥रंगरंगीलेसंतःरंगेजुगलरसरंगमैं॥तिनकोसुजस
यिज[illegible]मतिगाएहो॥९॥चोपई॥श्रीगुरचरनकमलसिरनाऊं॥संतनकीमहिमाकछुगाऊं॥
कीरतसारा॥तिहिंसुमिरेंजगहोइतधारा॥कलभजनकेसवअधिकारी॥वरणआश्रमसवहीनर
हिनजेंतेसकलपुनीता॥श्रुतिपुराणस्मृतिगावतगीता॥भ्रमतजोनिजियलखचोरासी॥कटी
वकुंजमफासी॥चारिखांनिमधिसंततफिरही॥सहिसंकटजनमेंअरुमरही॥३॥नर्कनिकेवअ
गतभोगा॥कसेंमिटेंकर्मभयरोगा॥मृगत्रिश्नांजगकोव्योहारा॥ताहीमेंजियसुभ्योअपारा॥४॥अ

४ राजमानरसनायाश्रीश्रीरंवमते नानाके निकुलाकुलापविलसत्सांडिः

कुदुखमधिसांमसनेही ॥ करुणासिंधु देत नरदेही ॥ नरतनखंड उतिजमुनां रूसा आनीरकं कायवनाःख
देवादिककु जाचत असें ॥ यह नरतन हम पावें कसें ॥ करि सतसंग नजहां हतवचन यों पंकजनैं ना ॥ सु
ई ॥ ऐसो उत्तम नरतन लह्यो ॥ तूल्यो मंद विखयरस गह्यो ॥ मोहजनि सो वे तकी पदरज मो वपु लाई
अनुरागि ॥ ७ ॥ प्रभु प्राप्ति को चहै उपाय ॥ सो सतसंग करो मन लाय ॥ नवनिधि तर ॥ तस्याहि
सुं हियराच कुरंग ॥ ८ ॥ सतसंगति अधार संसारा ॥ यही कहत रिखि वारं वारा ॥ तातें पुसागरतें
निश्चै मानि लान यह लीजे ॥ ९ ॥ संतसंग को सुनों महातम ॥ तातें मिटैं सकल संसय भ्रम ॥ म
सकको गाई ॥ मति अनुमान वरनौं चित लाई ॥ १० ॥ लिखिहौं सकल पुरातन साखी ॥ सो विचारि कैं चि
वरनी मुनिन पुरानन माहीं ॥ कहिहौं जे तिकै जानी जाहीं ॥ ११ ॥ १ ॥ कवित्त ॥ येः प्रेमाऽमलको म
गलत्सीयूषधाराधरप्रोक्ति चौदि विख्यापित श्रीकृष्णो पिचलाम्ब ऐतिशिरसान होजगन्नायकः ॥ १ ॥ चौपई
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य जु होई ॥ सूद्र जाति अंत्यज पुनि कोई ॥ कृष्णभक्ति जाकैं उर आवै ॥ सबतैं उत्तम सोई कहावै ॥
पावै ॥ श्लोक ॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वा यदि वेतरः ॥ विष्णुभक्तिसमायुक्तो ज्ञेयः सर्वोत्तमोत्तमः ॥ १
भक्ति सहित जो भजे गोपाला ॥ मुनितैं श्रेष्ट जदपि चांडाला ॥ द्विज कै हरिभक्ति नाहीं ॥ सुपच अधम सो
जसही ॥ २ ॥ श्लो ॥ चांडालोपि मुनिश्रेष्टो विष्णुभक्तिपरो यदि ॥ विष्णुभक्तिविहीनस्तु द्विजोपि श्वप
धमः ॥ २ ॥ चौ० ॥ चारि वेद वक्ता द्विज कोई ॥ मेरी भक्ति हिय नहि होई ॥ सो मोकों प्रिय लागत नाहीं ॥

सा॰भ॰टी॰चे॰
१२

रजीवसमसोजगमांही॥सुपचभक्तमेरीनकिहिकरही॥सोममप्रियसोईनवनिधितरई॥ताकौंदीजेतासौंलीजे॥मे
मताकोपूजनकीजे॥यहमहिमांहरिनिजमुखकही॥मोनिलीजियोसोसवसही॥३॥तथाहिश्लोक॥नमेभक्त
तुर्वेदीमद्भक्तःश्वपचःप्रियः॥तस्मैदेयंततोग्राह्यंसचपूज्योयथाह्यहं॥३॥चौ॥भगवद्भक्तसूद्रजोहो
हिसूद्रमांनैंमतिकोई॥सववर्णनमधिसूद्रवहीहै॥कृष्णभक्तिजिंहिहिरदैनाहीहै॥एसवसाखिजितिनै
गाई॥सोसवपद्मपुराणलषाई॥४॥श्लो०॥नशूद्राभगवद्भक्तायहिभागवतोत्तमाः॥सर्ववर्णेषुतेशूद्राये
क्ताजनार्दने॥४॥चौ०॥द्विजकुलमांहिजन्मजोलहई॥द्वादसगुणव्रतधारेंरहई॥हरिचरननितेंवि
जुहोई॥तासमनंदवुद्धिनहिकोई॥स्वपचहोइहरिभक्तिनिधांनां॥वाहिजतेंवढश्रेष्टभगवांनां॥
नभक्तिश्रमवतरई॥उनिश्चपनेसतकुलउद्धरहीई॥विमुखविप्रआपहूनतरिहै॥औरनियारन
है॥भक्तश्वपचवडहोयहजान्यौ॥सप्तममधिप्रह्लादवखान्यौ॥५॥सप्तमस्कंधेश्रीप्रह्लादवाक्
प्राद्द्विषड्गुणयुतादरविंदनाभपादारविंदविमुखात्श्वपचंवरिष्ठं॥मन्येतदर्पितमने
र्थप्राणंपुनातिसकुलंनतुभूरिमानः॥५॥५॥चो०॥सूद्रभीलसुपचाधमजोई॥भगवं
ई॥तेनद्विजातिकहिकरैंजुतर्क॥मंदवुद्धितेभोगेनर्क॥६॥तथाहि॥श्लो०॥शूद्रंवारासौ॥कटी
तथा॥वीक्षतेजातिसामान्यंसयातिनरकंध्रुवं॥६॥चौ॥हरिगुणग्रंथपुलिंदहो॥३॥नर्कनिकेवअ
सजात॥हरिदासनिकेंसरनैंआवैं॥होइपुनीतभागवतगावैं॥द्वैअनन्यजेयहजुमोअपारा॥४॥अ

याजत वान
जातजना

कों तत्छिन तारै॥७॥ द्वितीय स्कंधे शुकवाक्यं॥ श्लो०॥ किरातहूणांध्रपुलिंदपुक्कसा आभीरकंकायवनाः ख
सयः येन्ये च पापा यदुपाश्रयाश्रयाः शुध्यंति तस्मै प्रभविष्णवे नमः॥७॥ चौ०॥ कहत वचन येपंकज नैनां॥ सु
अर्जुन नर मेरे वेनां॥ मेरे भक्त चलैं जहां आछें॥ चलौं जाउं मैं तिनके पाछें॥ तिनकी पदरज मो वपु लागै
तब मेरो चित अति अनुरागै॥ भक्तन के पायन सों लागी॥ सिद्धि मुक्ति राजत जगमगी॥८॥ तथाहि
मद्भक्ता यत्र गच्छंति तत्र गच्छामि पार्थिव॥ भक्तानां मनुगच्छंति मुक्तयो मुक्तिभिः सह॥८॥ चौ०॥ गुन्य रूप सागर हैं
ही॥ तमअग्यान विनास निपुन हीं॥ जड जाकी सतसंग विराजै॥ श्रद्धा मय पल्लव तिहि साजै॥ यह विर
क्ति तिहि सोहै॥ प्रेम फल जाकें मन मोहै॥ घनआनंद की बरखा बरसै॥ रस बरखा रसिक जन सरसै॥ ना
हि निधि की दाता॥ अति उदार भुवन विख्याता॥ असहरि भक्ति लता सुखकारी॥ संत लिषी हितन
री॥ ९॥ हरि भक्ति कल्पलतिकायां॥ श्लो०॥ पुण्यं गोधि भवात मोविघटिनी सत्संगमूलोत्तमं दे [illegible]
नी विरक्तिलतिका प्रेमप्रसूनोज्वला॥ सांद्रानंद रसावहा च परम ध्येया विभूतिःप्रशा [illegible] सि [illegible]
लतिका नूयात्सतां प्रीतये॥ ९॥ चौ०॥ कमल पत्र पर जल कन जसें॥ ठहरत नहीं [illegible]
वनि चंचल अति॥ ताहि लखत है को कविमल मति॥ छिन हू सज्जन संगति क [illegible] सो नर [illegible] लत
नव निधि तरही॥ सो इह हरि भक्ति लता मधिक ही॥१०॥ तथाहि श्लोक॥ नलि [illegible]
तद्वज्जीवनमतिशयचपलं॥ क्षणमपि सज्जनसंगतिरेका॥ भवति भवार्णवतरणे [illegible]
विंद पद पङ्कज न करई॥ नाव सहित [illegible] सरई॥ संतन को पूजन न करं [illegible]

सा०चं०

३ दंतिकमनक्रूकहावैसोई॥सुनभागतितिनकौंकसैंहोई॥तातैंसंतपूजनअभिलाषै॥ …तरई॥ताकौंदीजेतासौंलीजे॥मे

॥११॥आगमे॥श्लो०॥अर्चयित्वातुगोविंदंतदीयान्नार्चयंतिये॥नतेविष्णुप्रसादस्य …न्ही॥३॥तथाहिश्लोक॥नमेन…

सुनकुमवानीवचनहमारो॥सारविचारयहेचितधारो॥सबदेवनकोपूजनक… ॥नगवदभक्तसदा जोदेौ

सेवा है॥हरिसेवाकुतैंयहसतभे॥वैष्णवकुंउतमउतमे॥आगमसारवचनयहलह्यो॥सो…हे॥एसबसाखि जितिनि…

१२॥आगमेपारबतीप्रतिशिववाक्यं॥श्लो०॥आराधनानांसर्वेषांविष्णोराराधनंपरं॥ ॥सर्वेवर्षैष्णुतेमर्क…

दीयानांसमर्चनं॥१२॥चौ०॥शिवकेलिंगहजारहिसेवै॥सालिग्राममसतपूजनलेवै॥ … ॥हरिचरनामितैंछि…

एकसाधुसेवासमजांनी॥संतनकोप्रभावयहजानतै॥महिमांपद्मपुरांणवखानतै॥१३॥प… त्रमानं…

लिंगसहस्राणांशालिग्रामशतस्यच॥तुल्यःस्यात्कोटिविप्राणामेकएवचवैष्णवः॥१३॥चौ॥…

लहौं॥दृष्टिहारसबहीकोगहौं॥स्वादलैनपरतछिवताकुं॥संतनकीरसनांसोपाकुं॥यहेकहीहरि…र…

नी॥मैयहैसोईसाखिवखांनी॥१४॥प्रभुवाक्यं॥श्लो०॥नैवेद्यंपुरतोनित्यंदृष्ट्वेवस्वीकृतंमया॥रसंधैभ…

कागेमभ्रामिकमलोद्भव॥१४॥चौ०॥प्रातकालउठिकीर्तनकरई॥संतनकीमहिमांउच्चरई॥तेभाग…

हैहरिसमांनां॥यामैंकछुसंदेहनआंनां॥यहउत्तममतहियधरिराखी॥विष्णुपुरांणकह्यौंतसाखी॥१५

ष्णुपुरांणे॥श्लो०॥प्रातरुत्थाययेनित्यंवैष्णवानांचकीर्त्तनं॥कुर्वंतितेभागवताःकल्पतुल्यानसंश

१५॥चौ०॥देवतानकौयहआचरणा॥प्रांणिनकौंदुखसुखकेकरणा॥संतनकौसुभावउदारा॥उ

वमात्रकौंसुखदातारा॥तुमसेसंतनमी… हई॥बसुदेवनारदजुसोंकहई॥संतनकौसुभा

सुखखांनी॥एकादशमधिमाखिवखांनी॥१८॥श्रीभागवतेएकादशस्कंधे॥श्लो०॥भूतानांदेवचरितं
खायचसुखाच॥सुखायैवहिसाधूनांत्वादृशामच्युतात्मनां॥१८॥चौ०॥जिनकोजसअगा [illegible] यो
री॥ऐसेकरुणांसिंधुमुरारी॥जिनकेमहतवेल्लवदासा॥तिनकेपदजोकरैउपासा॥ [illegible] यद [illegible] नो
दसंसारसमुद्रा॥होएवछपदसमअतिछुद्रा॥वछपदतेंमृतिकानिकारै॥तामैएक [illegible] वरूप॥श
तिहिर्उलंघतज्यौंखगनवारा॥ऐसेभवनिधितरअपारा॥परमसुक्तिवैकुंठहिपावै॥ [illegible] केमी [illegible] लोव।
रनसावै॥दशममध्यष्ठकमुखकीवांनी॥सोइनेखीसरससुखदांनी॥१७॥दशमेचह [illegible] मरहिन॥र [illegible]
कवाक्यं॥श्लो॥समाश्रितायेपदपल्लवप्लवंमहत्पदंपुण्ययशोमुरारेः॥भवांबुधिर्वत्सपदं [illegible] नेनदे [illegible]
दंयद्विपदांनतेषां॥१७॥चौ०॥गदगदकंठवकुंह्वैआवै॥चितद्रवैतनपुलकजनावै॥ [illegible] सि [illegible] नेत॥
सैकवहूंपुनिरोवै॥ह्वैविलज्जगावैरसभीवै॥प्रेममगनह्वैकवहूंनाचै॥ऐसेंजो [illegible] सोनरये [illegible] लन
मेरोनक्रमुनीतचरित्रा॥सकलभुवनसोकरैपवित्रा॥संतनकीमहिमांमनहरनी॥ [illegible] निंड [illegible]
षवरनी॥१८॥भगवानकेभक्तभुवनकोंपुनीतकरैहैतदाश्रीभागवतपमाण॥श्लो०॥च॰श [illegible] विसेन
[illegible] तनकधिष्ठि

यस्यचित्तंद्रसत्यजीद्दणंरुदतिक्कचिच्च॥विलज्जंतद्गायतिनृत्यतेचमद्भक्तियुताकोंदीजेतासोंलीजे॥मे
चौ०॥१८॥संतनकीनिंदारतजेनर॥तेहोयप्रगटग्रामकेसूकर॥सूकरग्रामक तथाहिश्लोक॥नमेन
॥वदनकसड जोदो
धतेनित्यकराई॥साधुनकीनिंदाप्रियजेही॥तिनकेपापआपग्रहिलेही॥निंद...वसाखि जितिनै
रई॥साधुनकोंनिर्मलनितकरई॥संतनकीनिंदाअसबुरी॥ब्रह्मपुराणएसाखियहधर्मंहुनेम्हारे
धुनिंदाबुरीहैतहांब्रह्मपुराणवाक्यं॥श्लो०॥निंदकाःशूकराश्चैवसफलानिर्मितावरनानितै...
शूकराःग्रामान्साधून्शोधंतिनिंदकाः॥१९॥चौ०॥कीटपतंगआदिसवकोई॥मुक्तिदेत...ध्रमी...
होई॥निंदककरैंजुकोटिउपाई॥वैष्णवद्रोहीमुक्तिनजाई॥वैष्णवविमुखलहैनहिचैंना॥...हरि...गारव
॥रसंधे...
हवैवैना॥२०॥तथाहि॥आगमे॥श्लोक॥मुक्तिःकीटपतंगानांसर्वेषामिहदेहिनां॥मु...तेनागच
प्राप्यवैष्णवद्वेषिणोविना॥२०॥चौ०॥वैष्णवपर्मधर्ममयजानैं॥पर्मतपोमयवैष्णवमानैं॥वैष्णवी॥१४
आराध्यलहेहैं॥परमगुरुवैष्णवहिकहेहैं॥२१॥श्लो०॥वैष्णवंपरमोधर्मोवैष्णवःपरमंतपः॥नसंह
॥जु
परमाराध्योवैष्णवःपरमोगुरुः॥२१॥चौ०॥गंगस्नानौनपापकोंहरई॥शशिमयूखसीतलताकरई॥जुवे

ऊ कल्पतरु छाया आवै॥ दुखदारिद्र दीनता न सावै॥ साधुन के जो सरनैं आवै॥ तीनताप ततकाल न ह
सावै॥ सुखनिधि साधुसमागम जानी॥ आगमे महिमा रुचिर बखानी॥२१॥ आगमे॥ श्लो०॥ गंगापा यो
ग्राश्री॥ तापं दैन्यं कल्पतरुर्हरेत॥ पापं तापं तथा दैन्यं सद्यः साधुसमागमः॥२२॥ चौ०॥ जलमय त गो
थ नांहि सु नांहि॥ मृतिका सिलमय देव कहां ही॥ गंगादिक जल तीरथ देंही॥ प्रतिमा देवरूप पू
ग्रहैं ही॥ सब ही सुंदर सुजस चरित्रा॥ बहुत काल तें करैं पवित्रा॥ साधु सुहृद सब जग के मीत लो
रसमात्र तें करै पुनीता॥ तातें बैल बपाय नि परसे॥ तीरथ प्रतिमां हू तें सरसे॥ संतन की महिमा॥२
नाखी॥ ताकौं विदित भागवत साखी॥२३॥ श्रीभागवते॥ श्लो०॥ नह्यम्मयानि तीर्थानि न देवा मृ
च्छिलामयाः॥ ते पुनंत्युरुकालेन दर्शनादेव साधवः॥२३॥ चौ०॥ भागवतन को लव सतसंग सं
म नांहि स्वर्ग सुख रंगा॥ मुक्ति हू ताकी सम नहिं पावै॥ तुच्छ राज की कौं न चलावै॥ तो मैं तैं सो नर लव
मां ही॥ लव सतसंग तिसमय नांही॥ यह महिमा महामंगल करनी॥ प्रगट सु रां कपद्म हि गिङ री
श्रीभागवते॥ श्लोक॥ तुलयाम लवेनापि न स्वर्गं नापुनर्भवं॥ भगवत संगि संगेन च : शा विसे
नक ऋषिङ्क

धुवलाके: भत्ता त्ता छ्या

सा०चं० ॥आदि को सभा कं

५

शिष॥२४॥चौपई॥विचरत संत मही इहिं हेता॥तीर्थनि हू पावन करि देता॥न व्है यु ताकौं दीजे तासौं लीजे॥मे
हरि श्रीपति चित चाहत खरे॥तु म्हरे भक्तन सौं हित गंनें॥तिन सौं रुचि कसें नर्क तथा हि श्लोक॥न मे न
कौ दास मेलावै॥यह हम्भ्रु न सा खि भागवत गावै॥२५॥श्लो०॥ते बौं विचरतां पद्भ्यां ...व सा खि जि तिनि
या॥नीतस्य किं नरो चेतता वकानां समागमः॥२५॥चौ०॥महद्तनु रस आश्रम तें आई॥दा...
ह धारें पाई॥तिनकौ करन विपुल कल्यानं॥यह कारन कारन नहि आंना॥व्रजराजा ज्ञकों ...नानि तें...
नी॥कही गर्ग रिषि सौं सुखदानी॥२६॥श्री भागवते श्री व्रजराज वाक्यं॥श्लो०॥महद्विचलनं
गृहिणां दीन चेतसां॥निःश्रेयसाय भगवन् कल्पते नान्यथा क्वचित्॥२६॥चौ०॥दोइ घरी इक घरी सु
बसें जहां हरि के जन आई॥तीरथ सकल तहां ही जानौं॥संत जन निज हां की यौ विक्रानौं॥वहीतं
वन उत्तम वासा॥कूल भक्त जहां करैं निवासा॥जहां हरिजन सोई उत्तम मही॥आगम मांहि सा १५
ब ह कही॥२७॥आगमे॥मुहूर्तं वा मुहूर्तार्द्धं यत्र तिष्ठंति वैष्णवाः॥तत्रैव सर्व तीर्थानि तदेव च
पोवनं॥२७॥चौ०॥हे श्री शुक मुनिराज कृपाला॥दीन उधारन विरद दयाला॥तुम से महानुभ

वस्तुद नरई॥ तिनकौ सुमिरण मात्रहि करई॥ होंहि ग्रहस्थ नके ग्रह पावन॥ ऐसे संत रसिक मन भावन॥ ह

तो तुम्हरो सुठि दरसन कीयो॥ चरन परस करि पद रज लीयो॥ पद पषारि चरणोदक लेई॥ करि सनमा

न आसन हि देई॥ वजन होइ पुनीत अति महा॥ यामें कछो अचंभो कहा॥ श्री शुक जू को दरसन सो

ई॥ इहि विधि नृपति परीक्षत कहई॥ श्री भागवते श्री शुकं प्रति विष्णुरातेन॥ श्लो०॥ येषां संस्मरणात् पुं

सां सद्यः शुध्यंति वै गृहाः॥ किं पुनर्दर्शनस्पर्शपादशौचासनादिभिः॥ २८॥ चौ०॥ गीता के जु श्लोक

कौं पढई॥ गोविंद नाम कीरतन रटई॥ वैष्णव दरसन करै जु कोई॥ कोटि कतीरथ स्नान फल होई॥ २[illegible]

तथा हि श्लोक॥ गीतायाः श्लोकपाठेन गोविंदस्य च कीर्तनात्॥ वैष्णवानां दर्शनेन कोटि तीर्थ[illegible]

लं लभेत्॥ २९॥ चौ०॥ सुनत कुंवर पूरण वचन हमारो॥ उत्तम विधि यह मन मैं धारो॥ यह उपास[illegible]

पन हि पावै॥ जप जाप सो हिय न हि आवै॥ वैस्वदेव वलि कर्म निगहई॥ यही कर्म तै सो न[illegible]

ई॥ अग्नि सुर्य विधि सेवन करई॥ वेद पढै व हृदय न हि फुरई॥ हरि भक्तन के पद[illegible]

क्षित दायक सुरधेनूं॥ तिहि रज मैं लोटै सच्चु पावै॥ यह रहस्य तव मन मैं आवैं॥ च: श[illegible]

[illegible]

सा॰चं॰
१६

अय नायो ॥ इहि विधि भरत ताहि समझायो ॥ ३० ॥ पंचमे स्कंधे रहूगणं प्रति जड भरतेयु ताकौं दीजे तासौं लीजे ॥ मे
न तपसा नयाति न चेज्यया निर्वपणा द्गृहा द्वा ॥ नछंदसा नैजेला ग्निसूर्यै विंना महत्स॰ तथा हि श्लोक ॥ नमे न
चौ॰ ॥ इंद्रादिक सुख भोग नि करई ॥ पुनि छीन नयेनी चे गिरई ॥ कुल न त कौ पात न होई ॥ नक सङ्ग जो दो
अजरा मर सोई ॥ कुल नक्ति कौ यह है प्रमानो ॥ विदित ख्खौ न त आदि पुरानों ॥ आदि पुराणे ॥ श्लो॰ तेनस्याद्यै
तीर्थाद्यः सर्वे स्वकर्मफलभोगिनः ॥ कुलनक्काघ्नये केचित् सर्वे था न पतंत्यधः ॥ ३१ ॥ चौ॰ ॥ हरि ते तैं हि
क्तन सौं मिलै जु कोई ॥ महा असाधु साधु सो होई ॥ जैसें जल अपवित्र मिलाई ॥ गंग हि मिलत गंग ग
ह्वै जाई ॥ इहि विधि संत संग अनिलारवी ॥ वरन लवण गट पुरानन नि सारवी ॥ ३२ ॥ अन्यच्च ॥ श्लोक ॥ सा
धु संग परिष्वंगात् असाधोरपि साधुता ॥ अगंगा मपि गंगा स्यात् गंगायां पतितं पयः ॥ ३२ ॥ चौ॰ ॥ वाके
कुल पवित्र नयो जानों ॥ जननी ताकु कृतारथ मानों ॥ परमे धन्य वहुत नृमिक हावे ॥ वैकुंठ धन्य १५
हि मन लावे ॥ पितर स्वर्ग वासी सब कोई ॥ जिहि कुल प्रगट वैस्नव होई ॥ उत्तर खंड मधि पद्मपुरांन
यह महि मां सब करी वरवांनां ॥ ३३ ॥ पाद्मोत्तरखंडे ॥ श्लोक ॥ कुलं पवित्रं जननी कृतार्था वसुंधरा

सावसतीचधन्या॥स्वर्गेछितातन्यितरोपिधन्या। येषांकुलेवैस्नवनामधेयः॥ ३३॥ चौ०॥श्रीनृसिंह
यहवचनसुनायो॥जनप्रह्लादसुन्योमनलायो॥ हेप्रह्लादमनयहैतमाहे॥ लुवपितुमुक्तिनयो
तेचाहे॥ कुलइकीसइहिंपातकमई॥पीढीइतीकुलतारथमई॥ जिहिंग्रहसाधुवैस्नवल्याई॥तोसो
मुत्रप्रगटनयोग्राई॥ ३४॥ सप्तसप्तंथेग्रकारंप्रतिश्रीनृसिंहदेववाक्यं॥श्लो०॥ त्रिःसप्तभिःपितृ
तःपितृभिःसहतेनघ॥यत्साधोस्यगृहेजातोनवान्वेकुलपावनः॥३४॥ चौ०॥ मेरेभक्तजहांजहां
हई॥ सांतसुहृसममतिजगचहई॥ मोमेंजिनकीनेष्टारहई॥ क्रियासहितमोहिनैननिचहैं
त्रसेसाधुउदारचरित्रा॥ वसैमगहतिहिंकरैपवित्रा॥ महिंमोयहअद्भुतसुखदानी॥श्रीनर
हरजुकीवानी॥३५॥श्लो०॥ यत्रयत्रचमद्भक्ताः प्रशांतासमदर्शिनः॥साधवःसमुदा...॥
पूयेत्स्यपिकीकटः॥३५॥चौ०॥ कुलमंत्रतेंरहितजुकोई॥ नरपापीदुरात्मासोई॥ स्वांनकितरयैकुल
कौमांनौं॥ मदिरासमजाकोजलजानौं॥ लिख्योपुरातनसाखिलह्योहै॥ तंत्रमध्ययहनिंद...
है॥३६॥श्लो०॥कुलमंत्रविहीनस्यपापिष्टस्यदुरात्मनः॥श्वांनविष्टासमंचान्नंजलंचशा...विसैन
...नकं...

अवैस्नव की दिछ्या लेकोई॥ ताहि नर्क निश्चै करि होई॥ फिरि वैस्नव गुर विधि करि कौं दीजे तासौं लीजे॥ मै
ग्रहण करिलेई॥ कछु सुख कलियत मैं नहि नारखी॥ पद्मपुराण यहै विधि साखी॥ ३७॥ याहि स्लोक॥ नमे मन्त्र
अवैस्नवोपदिष्टेन मंत्रेण निरयं व्रजेत्॥ पुनश्च विधिना सम्यक् ग्राहयेद्वैस्नवाद्गुरोः॥ ३७॥ ... नक सरूप जो दी
... ... खि जितिनि
वेदहैं यातैं श्रेष्ट॥ तातैं वाको नाम वरेष्ट॥ जिह्वाग्र तुम्हारो नामा॥ जप तर है सुंदर अभिरामा॥ ... ...
सुपच सव होतव्यकीनौं॥ अग्निहोम तिहि सव करि लीनौं॥ तीरथ स्नान सव जिहि करै॥ चारि वेद तिहितैं ...
वउचरै॥ जिह्वाग्र वे मजु तदीयो॥ जिहि हरिनाम उच्चारण कीयो॥ नाम महात्म यह रस लह्यौ॥ देव ...
ति जु वचनु प्रतिकह्यौ॥ ३८॥ तृतीयस्कंधे श्रीकपिलभगति देवहूतिवाक्यं॥ स्लोक॥ अहोवत श्वपचोतो गरी
यान् यज्जिह्वाग्रे वर्तते नाम तुभ्यं॥ तेपुः स्तपस्ते जुहुवुः सस्नुरार्या व्रह्मानूचुः नाम गृणंति ये ते॥
३८॥ चौ०॥ विप्र अवैस्नव जो कोउ होई॥ महाअधम द्विज जानौं सोई॥ संभाषण तिहि करियै नाही॥
ताकी कवकुं छुवो जिनि छांही॥ शास्त्रन कानि कि है कीराषै॥ पद्मपुराण वचन यह भाषै॥ ३९॥ पाद्मे:
स्लोक॥ अवैस्नवास्तु ये विप्रास्तेषां नाशं ... ... ते सां संभाषणं स्पर्शं दूरतः परिवर्जयेत्॥

रूपं ॥ चौ० ॥ हमरे सबै जग पद्मकारा ॥ धृक हमरे व्रत बुद्धि अचारा ॥ धृक विद्या पढि वो सब गनौं ॥ धृक से
हम रोय हम्पा तायनौं ॥ धृक हमरे व्रत सब ही करे ॥ धृक कुल मद अभिमान निनरे ॥ धृक निउनतः
रज्ञो गुण छये ॥ हाइ हम तैं विमुख जु नये ॥ हम नक्ति म हि मां जब जांनी ॥ निज मुख धृक कहा व्र
जनिव षांनी ॥ धनि इह पतनी हरि मन भांवन ॥ इन हि पर सिहम कैं है पावन ॥ ४० ॥ श्री नागवां के
शमस्कंधे यज्ञपत्नी प्रति वाक्यं ॥ श्लो० ॥ धिक जन्म नस्त्रिवृद्विद्यां धिक व्रतं धिक बहुज्ञतां ॥ मा
धिक कुलं धिक क्रियादाक्ष्यं विमुखा ये त्वधोक्षजे ॥ ४० ॥ चौ० ॥ हरि के विमुख हरि तैं न जिये ॥ तिनको
संग करत जिय लजिये ॥ देखत ही विमुखनि तैं डरै ॥ नक्ति मांहि जिनि अंतर परै ॥ में विचारियं ले हो
मां नो ॥ ताको साषी पद्मपुरांनो ॥ ४२ ॥ पद्मपुराणे ॥ श्लो० ॥ संगत्यागो विदूरेण नगवद्विमुखे र्जनैः तदा लोक
मात्रेण नगवद्भक्ति विस्मृतिः ॥ ४३ ॥ चौ० ॥ मक्कर सां पना हर सौं मिलिये ॥ ऐसौ हूं नयखुषकरि फिरि [illegible] ल
रि सत्य तुल्य वे बाधक ॥ नाना देवन के आराधक ॥ तिन सौं मिलनौं आछौ नाहीं ॥ यह निंड [illegible]
मन मांही ॥ ४४ ॥ पद्मपुराणे ॥ श्लो० ॥ आलिंगनं वरं मन्ये व्याल व्याघ्र जलौकसां ॥ न संगः शल्य [illegible] वि [illegible]
[illegible] नक [illegible]

नानादिवैकसेविनो॥४२॥ चौ०॥ वैस्नवसौंहितकरिवतराई॥ वैस्नवजनसौंमिलियधाई॥ वै ीजेतासोंलीजे॥मे
वनपरसै॥ निर्मलहोइदिव्यतनदरसै॥ वैस्नवपंक्तिकरजोभोजन॥ होइपापतैंनिर्मलसोज श्लोक॥ नमेन
हरिहोहितलघुनारी॥ तेलबुंदज्योंजलतेंन्यारी॥ इनश्लोकनिकीसाषिकहांहै॥ देखोपद्मपुर... जोदो ...जितिनैं
४३॥ श्लो०॥ आलापाद्गात्रसंस्पर्शान्निश्वासात्सहभोजनात्॥ संचरंतिचपापानितैलविंदुरिवांभ... तैंहि
४३॥ चौ०॥ वैस्नकौंदेषतहीजोनर॥ करप्रणाममनहर्षकैंभूपर॥ जितनेंरजकणतनसौंलागे॥ ता
महिमांसुनिअनुरागै॥ तितनेंसतमन्वंतरतांही॥ संततरहैस्वर्गकेमांही॥ मैंयहलिखीशास्त्रअनु
सारा॥ आगमैमहिमांकहितअपारा॥४४॥ आगमे॥ श्लो०॥ दंडवत्प्रणामंकुरुते वैस्नवेनक्तिभावितः॥ र ते॥
संख्यावसेत्स्वर्गेमन्वंतरशतैर्नरः॥४४॥ चौ०॥ जन्महजारकियेअपराधा॥ कोटिजन्मकेपापअगा री॥
संतनकोचरणंमृतलेत॥ इतनैंपायभस्मकरिदेत॥ यहमहिमांसुनिजियअभिलाषी॥ लिषीना पादेः
थ्योतरमधिसाषी॥४५॥ श्लो०॥ जन्मांतरसहस्राणांकोटिजन्मांतरेषुयत्॥ यद्दहेत्सिचपापानिस येत॥
पादोदकंपिवेत्॥४५॥ चौ०॥ वैस्नवकौउच्छिष्टजुसेसहि॥ पितरनकोंदेइसुरेसहि॥ द्विजसैंतिन

पवित्रद्दिकरै ॥ लेतद्दिहियें भक्ति संचरै ॥ ब्रह्महत्या सुदजारनि नासै ॥ भ्रूणहत्या सतसद्य विनासैं ॥ पायस
बैनिवृत्ति करिदेई ॥ वैष्णवप्रसादी जो जन लेई ॥ यह महिमा वड भागी जानत ॥ कासीखंड प्रतछि वखांनतः
काशीखंडे ॥ श्लो० ॥ वैष्णवोच्छिष्टशेषं वै पितृणां च देवौकसां ॥ सर्वेषां च सुरादीनां भक्तिदं कल्मषापहं ॥ १ ॥ ब्र
ह्महत्यासहस्राणि भ्रूणहत्याशतानि च ॥ तस्य पापानि नश्यंति वैष्णवोच्छिष्टभोजनात् ॥ ४६ ॥ चौ० ॥ वाके
पितर हर्ष हिय भरैं ॥ स्वर्ग गेकि वकुनि निर्नैदि करै ॥ धन्य कहत हम वारंवारा ॥ वैष्णव कुल मैं भयो कुमा
रा ॥ यह हमकौं निश्चै तारैगो ॥ अपनौं कुल कारिज सारैगो ॥ वैष्णव महिमा प्रगट जनावै ॥ पद्मपुराण एस
खि यह गावै ॥ ४७ ॥ पद्मपुराणे ॥ श्लो० ॥ आस्फोटयंति पितरो नृत्यंति च मकुर्मुकुः ॥ वैष्णवो सत्कुले
तः सोस्मान्संतरयिष्यति ॥ ४७ ॥ चौ० ॥ तो लौं पितर भ्रमत संसारा ॥ पिंड दितरसत वारंवारा ॥ कुलमैं
भक्ति रस भोये ॥ कृष्ण भक्त जो लौं नहिं होये ॥ ४८ ॥ पद्मपुराणे ॥ श्लो० ॥ तावद्भ्रमंति संसारे पितरः कुल
स्पराः यावत्कुलेसुतः कृष्ण भक्तियुक्तो न जायते ॥ ४८ ॥ चौ० ॥ कृष्ण वै हि सुख सुत संसारा ॥ पिंड मुख
रहजारा ॥ पितर करत नहिं अंगीकारा ॥ यह सास्त्र कीयो निर्द्धारा ॥ ४९ ॥ श्लो० ॥ वहिर्मुख वे न विसै
नकं पसिद्धिः

हूंयत्यित्त एां तथा॥शतधाधिंड दानंयत्कृतंसर्वमनर्थकं॥४९॥चौ०॥नक्कनपराधीनहौंअ जेतासौंलीजे॥मे
वंध्योडोरिसौंजसैं॥नक्किनिमेरोहियेअसगह्यो॥तिंहिंतजिछिनह्नजातनरह्यो॥श्रीएस लोक॥नमेन
प्रियमोही॥डर्वासासमझोकंतोही॥ ॥५०॥श्रीभागवते॥श्लोक॥अहंभक्तपराधी साह जोदो जिति
स्वतंत्रइवद्विज॥साधुभिर्ग्रस्तहृदयोभक्तैर्भक्तजनप्रियः॥५०॥चौ०॥मेरोहृदयसाधुहीजानो॥स स्वधे
नकोहियमेंनहिछांनौं॥मोविनुसाधुनकाकुहिजानें॥तिनविनमोमनतननकनमांनें॥दुर्वास तैहि
हरियहकही॥साखिसुहीसवश्रुतिमही॥५१॥श्लोक०॥साधवोहृदयंमह्यंसाधूनांहृदयंत्वहं॥मदन्य
तेनजानंतिनाहंतेभ्योमनागपि॥५१॥चौ०॥जहांममभक्तसकलसुखजहां॥गंगादिकसवतीरथतहां॥
आदिपुराणभक्तिसुखदैना॥कृष्णकहतअर्जुनसौंवैना॥५२॥आदिपुराणे॥यत्रयत्रचमद्भक्तास्त
त्रतत्रसुखानिच॥गंगादिसर्वतीर्थानितत्रैवायांतिसर्वदा॥५२॥चौ०॥मेरेभक्तलगतजिंहिंप्यारे॥सो
ईमेरेप्रांणपियारे॥तासमप्रभुहिकोउवल्लभनाही॥अर्जुनसत्यकहौंतुहिपांही॥५३॥श्लोक०॥मद्भक्तो
वल्लभोयस्यसएवममवल्लभः॥तस्माद्वल्लभोनास्तिसत्यंसत्यंममार्जुन॥५३॥चौ०॥विरवईभक्तहे

इ जो कोई ॥ दुराचारता मैं कछु होई ॥ मेरो भक्त पवित्र द्विज नौं ॥ श्रीगुरु तन भक्तन मन मैं आनौं ॥ भक्त
दोष जो मन मैं लावै ॥ सो नर नर्क मांहि दुख पावै ॥ जो अपनौं चाहत कल्यांना ॥ सुनौं सात्वत यह आदि
पुरांनां ॥ श्लो० ॥ विषयातप्यकारी च मद्भक्तः सर्वदाशुचिः ॥ तद्दोषदर्शने लोकास्तेवै नरकगामिनः
५४ ॥ चौ० ॥ तेई देस पांवन नित लसैं ॥ जहां हरि के प्यारे जन वसैं ॥ देस जिहीं हरि भक्त न होई ॥ ता समांन अ
पवित्र न कोई ॥ महापुनीत देस ते राजैं ॥ जहां हरि प्यारे संत विराजैं ॥ ५५ ॥ श्लो० ॥ तं देशं पतितं मन्ये यत्र
नास्ति हरेः प्रियः ॥ तद्देशं सफलं मन्ये यत्रास्ते श्रीहरिप्रियः ॥ ५५ ॥ चौ० ॥ म्लेछ देस निश्चै है जहां ॥ अथवा वे
सम लिन होए तहां ॥ जहां वसत मम जन सुखदांनी ॥ जो जन तीन छेत्र वद जांनी ॥ निज भक्तन को यश
प्रताप ॥ कहत वराह धरनि सौं आप ॥ ५६ ॥ वाराहपुराणे ॥ श्रीवाराहदेववाक्यं ॥ श्लो० ॥ यो जनाति
ष्यात्रीणि मम क्षेत्रं वसुंधरे ॥ म्लेछदेशेप्यनेवापि मद्भक्तो यत्र तिष्टति ॥ ५६ ॥ चौ० ॥ भक्त हमारे वां कल
नीके ॥ भक्तन के हम बंधु सहीके ॥ मेरे भक्त गुरु वे मेरे ॥ मैं गुरु भक्त सदा मम चेरे ॥ भक्तन की मुख्य
यह गाई ॥ श्रीमुख आदिपुरांण लखाई ॥ ५७ ॥ आदिपुरांणे ॥ श्लो० ॥ अस्माकं वांधवा भक्ता भ वि
वांधवा वयं ॥ अस्माकं गुरवो भक्ता भक्तानां गुरवो वयं ॥ ५७ ॥ चौ० ॥ महिमा मम हा प्रसाद जिन क

गोविंदनामप्रभावतितेका॥ ब्रह्मज्ञाननौंनियटदुराया॥ वैस्नवमहिमांनकिछुताया॥ ञ्ज॰ जेतासोंलीजे॥ मे
संचयजिंहिंयासा॥ तिनकैंकुवहूनहोइविस्वासा॥ तातैंइनमैंदृढकरिभावा॥ वरभोंप॰ चेतोक॥ नमैन
उपावा॥ प८॥ पद्मपुराणे॥ श्लो०॥ महाप्रसादेगोविंदेनामब्रह्मणिवैस्नवे॥ स्वल्पपुण्यवतांराजन्‌जोदौ
विश्वासोनैवजायते॥ प८॥ चौ०॥ जोकदाचिहरिभक्तनमांही॥ स्वाभाविकजुदोषदरसांही॥ सॊ॰ जितिनै
हकृतदूषणादरसैं॥ हरिभक्तनकौंकवहुंनपरसैं॥ भक्तदोसप्राकृतनमांनिये॥ नक्तनकौंवाधक कृष्णचे
नजानीये॥ ओरकोंधुनीतकृतग्रंथो॥ सकलभांतितेसदासमर्थो॥ ताकोयहदृष्टांतविचारो॥ सोसुनिवै
संदेहनिवारो॥ गंगामधिवुदवुदअरुझागा॥ तीरतीरकीचकैविभागा॥ देखनमैंएओगुनआवैं॥ तोक
होगंगप्रभावमिटावैं॥ ब्रह्मद्रवताजगमगनजहांही॥ हरतिब्रह्महत्याछिनमांही॥ तैसैंहिसंतगोविंद
पियारे॥ सवदोसनकौंभंजनहारे॥ जामेकछूसंदेहरहैंना॥ महाप्रभूजूकेएहवैंना॥ प९॥ श्लो०॥ दृष्टैः
स्वभावजनितैर्वपुषश्चदोषैर्नप्राकृतत्वमिहभक्तजनस्यपश्येत्॥ गंगांभसांनखलुवुद्‌वुदफेनपंकैर्ब्रह्म
द्रवत्वमपगच्छतिनीरधर्मैः॥ प९॥ चौ०॥ वोलीहमरीतुमगुनगावो॥ श्रवननिसुजसतिहारोइनावो॥
हस्तचरनसेवानितलहो॥ मस्तकचरणकमलमधिरहो॥ मनसुमरणनितकरौतिहारो॥ संततुमहि

ए नयन निहारो॥ सुत कुबेर के अति वड भागी॥ दामोदर जू सौं यह मांगी॥ ९०॥ श्री भागवते दशम स्कंधे न
लकूबर वाक्यं॥ श्लो०॥ वाणी गुणानुकथने श्रवणौ कथायां हस्तौ च कर्मसु मनस्तव पादयोर्नः॥ स्मृत्यां शिरस्त
व निवास जगत्प्रणामे दृष्टिः सतां दर्शनेस्तु भवत्तनूनां॥ ९०॥ चौ०॥ और न सुनौं और न हि कहौं॥ और कौ
चिंत वनन चहौं॥ और न सुमरौं और न भजौं॥ आश्रय और करत हौं तजौं॥ दे श्रीकृष्ण चंद्र सुखरासी॥ दे कुदा
स्य करि चरण निवासी॥ यह मुकुंदमाला की वांनी॥ हित करि लिखी संत सुखदांनी॥ ९१॥ मुकुंदमालायां॥ श्लो०
नान्यं वदामि न शृणोमि न चिंतयामि नान्यं स्मरामि न भजामि न चाश्रयामि॥ भक्तिस्त्वदीयपदपंकज मारे कृ
ए श्रीश्रीनिवास पुरुषोत्तम देहि दास्यं॥ ९१॥ चौ०॥ वासुदेव के भक्त अनन्या॥ सांत सुद्ध समचित वे धन्य जे
तिनको दास निदास कहाऊं॥ जन्म जन्म प्रभु एह वर पाऊं॥ तब एह नरतन होए पुनीता॥ विदुर कहे
त मधि पांडव गीता॥ ९२॥ पांडवगीतायां॥ विदुरवाक्यं॥ श्लो०॥ वासुदेवस्य ये भक्ताः शांतास्तद्गतमानसाः सकल
तेषां दासस्य दासोहं भवे जन्मनि जन्मनि॥ ९२॥ चौ०॥ जिंहि कुल मैं जो नरतन पावै॥ तहां समुझ
नाम कहावै॥ माता ताकी पुत्रवती है॥ पितरन को धुरधान वही है॥ गरुड़ पुरांण एव खांन तनु ऐसें॥ विवे
मां न भक्ति लखी मैं तैसैं॥ ९३॥ गरुड़ पुराणे॥ श्लोक॥ कलौ भागवतं नाम यस्य पुंसः प्रजायते॥ तत्कुलं विधि

सा॰चं॰ त्रिणीतेनपितृृणांतु धुरंधरः॥६२॥चौ०॥अंतकालक्षमैं जिंहिं यासा॥रसिकवैस्नवकरैनिछु॰

११ क्त्यामयपापीहोइ॥भगवतधांमपाइहैसोई॥हरिजनमहिमांसकृतिदानी॥मार्कंडेजूकीय नैतासोंलीजे॥मे

द्ध॥श्रीमार्कंडेयवाक्यं॥श्लो०॥समीपेतिष्टतेयस्यहंतकालेपिवैस्नवः॥गच्छतेपरमंस्थानंय ोक॥नमेन

लहाभवेत्॥६४॥चौ०॥स्वपचकुविस्नुभक्तजोहोई॥द्विजतैंअधिकमांनियेसोई॥विस्नुभक्ति जोदो जितिनै

तीकहावै॥स्वपचतैंअधिकसुधिकतापावै॥वांमदेवनारदपुराणमधि॥रुकमांगदसोंकहीयह॥वि

ईय॥नारदीयेरुक्मांगदप्रतिश्रीवामदेववाक्यं॥श्लो०॥स्वपचोपिमहीपालविस्नोर्भक्तोद्विजाधिकः॥विस्नु तैंहि

भक्तिविहीनोयतिश्चश्वपचाधिकः॥६५॥चौ०॥हेकेशवतुमतुष्टजुहोऊ॥ताकीमहिमांसुनियेसोऊ॥

स्वपचहि इंद्रमहेस्वरहोई॥ब्रह्मापरब्रह्मकेसोई॥तुमतेविमुखब्रह्मईसांनां॥सद्यदेवहोंइस्वपच

निदांना॥रेवाखंडसकंदपुरांनां॥ब्रह्मानिजमुखवचनवखांनो॥६६॥स्कंदेरेवाखंडेश्रीब्रह्मोक्तो॥श्लो०

इंद्रोमहेश्वरोब्रह्मापरंब्रह्मतदैवहि॥श्वपचोपिभवत्येवयदातुष्टोसिकेशव॥१॥श्वपचादपिकष्टत्वं

ब्रह्मेशानादयःसुराः॥तदैवाच्युतयोस्मेतेयदैवत्वंपराङ्मुखः॥६७॥चौ०॥हेकेशवजोतुम्हरेभगताः

सर्वधर्मकर्तीवहजगता॥तुम्हरीभक्तिजिंहिनहींगही॥सवकूधर्मकर्तीसोसही॥ब्रह्माजूयहमहिमां

जोंनी॥ सोमुनिकाशीखंडवखांनी॥ ६१॥ तत्रवाक्यं॥ श्लो०॥ सक्तोसर्वधर्मा एणं भक्तोयस्तवकेशव॥ तक्तोमीस
र्वपापानां योनभक्तस्तवाच्युत॥ ६२॥ चौ०॥ देहहरितुम्हरो भक्तजुकोई॥ ताकोंसत्रुमित्रसमहोई॥ विदशल्ता
हिपथ्यकैजाई॥ करैअधर्मधर्मफलपाई॥ तुमजोकृपानकरोमुरारी॥ पथ्यवस्तु विखकोफलदेई॥ धर्म
करतअधर्मफललेई॥ ६३॥ श्लो०॥ अरिर्मित्रंविषंपथ्यं अधर्मोधर्मतांव्रजेत॥ प्रसन्नेपुंडरीकाक्षेविपरीतेवि
पर्ययः॥ ६३॥ चौ०॥ सर्वधर्मकर्त्ताजोकोई॥ हरिकोरसिकभक्तनहिहोई॥ तोवहजोनिनर्कअधिकारी॥ ह
तिहियोंहीनरदेहविगारी॥ ब्रह्महत्यारीहरिजनहोई॥ होइविसुद्धमुक्तिकैसोई॥ ६४॥ श्लो०॥ निशेषधर्मसद
र्त्तावाप्यभक्तोनरकेहरे॥ सदातिष्ठतिभक्तस्तेब्रह्महापिविमुच्यते॥ ६४॥ चौ०॥ हरिकेभक्तकृपाकेसिंधुते
करुणाकरदीननकेबंधु॥ हरिविचरतविचरैंजगमांही॥ जगरक्षाहितजहांतहांजांही॥ हरिकिंकरकृपाधरते॥
जनरूपा॥ जगपालनविचरैव्रजभूपा॥ हरिहरिजनमैंभेदनजांनी॥ नारदमुनिसोंकहतवखांनी॥ सकल
दपुराणेनारदंप्रतिदुर्वासावाक्यं॥ श्लो०॥ नूनंभागवतालोकेलोकरक्षाविशारदाः॥ व्रजंतिविष्णुनासमं
हरिस्थेनमहामुने॥ १॥ भगवानेवसर्वत्रभूतानांकृपयाहरिः॥ रक्षणायचरेल्लोकान्भक्तरूपविधे

नर्क॥ साक्षि

॥७०॥चौ०॥सबगंवैस्नवरूपसदांही॥स्वर्गरसातलनूतैंमांही॥स्वर्गदेवगनपूजनकरई॥मनुजपूजितं नेतासोंलीजे॥मे
तधरई॥नागलोकमधिपूजतनागा॥जेपूजैंतेहीवडभागा॥वैस्नवदरसनकरिजुतनाई॥लाखनिपाप गोक॥नमेनत्र
ई॥यामैकछुसंदेहनकरिये॥यहमहिमांहितसोंचितधरिये॥अमृतसारउधारमधिलही॥धर्मराइद्रू साहजोदो
ही॥७१॥श्लो०॥सर्वत्रवैस्नवाःपूज्याःस्वर्गेमर्त्येरसातले॥देवतानांमनुष्याणांतथैवोरगरक्षसां॥१॥ये जितिनै
स्मरणमात्रेणपापलक्षशतानिच॥दहंतेनात्रसंदेहोवैस्नवानांमहात्मनां॥७१॥चौ०॥वैस्नवनकीच स्वद्ध तैंहि
रजपरसैं॥गंगस्नानसमफलसरसैं॥जमुननर्मदामधिजोन्हांये॥सोफलसंतचरणरजलाये॥
णोदिककीमहिमांजेती॥मोपैंकहीजातनहितेती॥७२॥श्लो०॥येषांवैपादरजसाआप्यतेजान्हवीजलं
नार्मदंयामुनंचैवकिंपुनःपादयोर्जलं॥७२॥चौ०॥वैस्नवजनकीवाणीवारि॥सोईतीरथकह्योविचारि॥
वचनतीर्थजेकरिहैस्नांनां॥तामहिमांकोमुनौंवखांनां॥गंगाजलहूमैंविनुन्हांये॥सहसतीरथमज्जनबि
नुपांये॥सबतीरथनिस्नांनफलहोई॥ताकोवचनसुनौंअबसोई॥७३॥श्लो०॥येषांवाक्यजलौघेनविना
गंगाजलैरपि॥विनातीर्थसहस्त्रेणस्नातोभवतिमांनवः॥७३॥चौ०॥शंखचक्रअंकिततनुर्हमै॥तुल

सिमंजरीसीसविराजे॥ गोपीचंदनमंडितअंगा॥ रंगेरहतजेहरिकेरंगा॥ असेजनकोदरसनलहही॥ तिनकोपाय
कहोतनरहही॥ ७४॥ पाद्मे॥ श्लो०॥ शंखचक्रांकिततनुः शिरसामंजरीधरः॥ गोपीचंदनलिप्तांगोदृष्टश्चेत्तदघंकुतः॥
७४॥ चौ०॥ कंठतुलसीकीमालविराजैं॥ पंकजमणिहूंकीसुनसाजैं॥ वाकुमूलशंखादिककीयें॥ हरिमंदिरमस्तक
परदीये॥ अैसेहरिकेभक्तसुहाये॥ तुवनपवित्रकरनजुवआये॥ ७५॥ श्लो०॥ ये कंठलग्नतुलसीनलिनाक्षमा
ला येवाकुमूलपरिचिह्नितशंखचक्राः॥ येवाललाटफलकेलसदूर्ध्वपुंड्रास्तेवैष्णवाभुवनमाशुपवित्रयंति॥
चौ०॥ नित्यप्रातउठियहव्रतधरही॥ वैष्णवनामकीर्तनकरही॥ कलिमेंपरमभागवतजोई॥ कृष्णसमानसद
नियेसोई॥ द्वारावतीमहातमसाखी॥ श्रीप्रहलादवलिहियहभाखी॥ ७६॥ द्वारिकामाहात्मेवलिप्रतिप्रे
ह्लादवाक्यं॥ श्लो०॥ नित्यं येप्रातरुत्थायवैष्णवानांतुकीर्तनं॥ कुर्वंतितेभागवताः कृष्णतुल्याः कलौयुगे॥
७६॥ चौ०॥ कृष्णभक्तचलिजिहिजलमांही॥ मज्जनकरैंअंगतिहिवाही॥ वेजलविमलहोयततकाला॥ सकल
तीर्थतैंअधिकरसाला॥ यहइतिहाससमुच्चयगायो॥ लोमसजूयहवचनसुनायो॥ ७७॥ इतिहाससमुच्चय
लोमसवाक्यं॥ श्लो०॥ यत्रभागवतास्नानंकुर्वंतिविमलाशयाः॥ तत्तीर्थमधिकंविद्धिसर्वपापविशो॰
७७॥ चौ०॥ चंदनपुष्पहरिहिजोअर्पैं॥ जलनानांनैवेद्यसमर्पैं॥ करिजपवासनलसरसावैं॥ आराधनकर्यविधि

सा० चूं०
१३

गुनगावै॥ ऐसे परि वैस्नव तान हि होई॥ तिहि सेवा हरि तृप्ति पति न होई॥ तातै वैस्नव मोहन मीता॥ सकल लो[...] मौं लीजे॥ मे
करै पुनीता॥ तिहि मत संगति रुचि मांनीये॥ परम तीर्थ वैस्नव जांनीये॥७८॥ तत्र वाक्यं॥ श्लोक॥ न गंगैर्न तथा [...] मैन
तो यैर्न पुष्येषु मनोहरैः॥ सानिध्यं कुरुते देवो यत्र संति न वैस्नवाः॥१॥ वनिनिष्कोपवासैश्च न त्यगी नादिने सपा॥ [...] द्रौं
नित्यमाराध्यमानोपि तत्र विष्णु र्न तृप्यति॥२॥ तस्मादेते महाभागा वैस्नवा वीतकल्मषाः॥ पुनंति सकलांल्लोकान [...]
तत्तीर्थमधिकं ततः॥७८॥ चौ०॥ तातैं चरनजु हरि हरि फावन॥ वैस्नव सेवा करि अति पावन॥ होंहि प्रसन्न [...] तैं हि
स्नव जायर॥ हरि प्रसन्न ही जांनौं तापर॥७९॥ श्लो०॥ तस्माद्विष्णुप्रसादाय वैस्नवान्परितोषयेत्॥ प्रसाद[...]
सुखो विष्णुस्तेनैवस्यान्न संशयः॥७९॥ चौ०॥ हरि भक्तन कौ दरसन करई॥ संभासन करि हियमुद भरई॥ [...]
भक्त सौं मिलि करै वासा॥ ताकी महिमां सुनहु प्रकासा॥ नीच कुजो या विधि कौं धारे॥ होइ पुनीत सकल कुल
तारै॥ जे ब्रह्मांड पुरांण लहे है॥ चित्रगुप्त के वचन कहे है॥८०॥ श्लो०॥ दर्शन स्पर्शनालाप सहवासादिभिः
क्षणात्॥ भक्ताः पुनंति कुलस्य सा चालादपि च पुक्कसं॥१॥ त्यक्त सर्व कुलाचारो महापातकवानपि॥ विष्णोर्भक्तं
समाश्रित्य नरो नार्हति यातनां॥८०॥ चौ०॥ वही नृमिमरुन्नमि जांनिये॥ सोई नीरस दे समांनिये॥ जहां न संत

सफल तरु छांही॥ सीतल करन हारत हां नांही॥ एक घरी कुंज हां न वसीये॥ तहां तें वेग कमरि ही कसीये॥
संतन की महिमा सुखदाई॥ यह वसिष्ट रिषिवर नि सुनाई॥ ८४॥ वासिष्टे॥ श्लो०॥ यस्मिं देशे मरो तद्भक्तो नार
स्ति सज्जन पादपः॥ सफलं सीतल छायो न तत्र दिवसं वसेत्॥ ८५॥ चौ०॥ सदा संतनि घरे चलि जैये॥ छिन सों रि
ति मिलि रंग बढैये॥ जद्यपि वे उपदेस न करई॥ जो कछु मधुर वचन उच्चरई॥ सोई उपदेस मानि श्रुति लीजैः
ईहि विधि निज कल्याण करीजे॥ यह वसिष्ट जू वरनन कीनों॥ सो यह सार वचन में लीनों॥ ८६॥ वासिष्टेः
श्लो०॥ सदा संतो भिगंतव्या यद्यप्युपदिशंति न॥ याहि स्वैर कथास्तेषामुपदेशा भवंति ते॥ ८७॥ चौ०॥ सद
सजगप जो विधि वत करै॥ तासों तौ वेदांती सिरै॥ वेदांती जु कोटि मति सतम॥ तिहितें क देम कृष्ण ति
उतम॥ तिन मैं जे एकांती साधू॥ रसिकन की महिमां सुगम गाधू॥ यह पुराण कौ वचन सुहायो॥ सोई वर
नि कैं सब नि सुनायो॥ ८८॥ गरुड पुराणे॥ श्लो०॥ सत्र याजि सहस्रेभ्यः सर्व वेदांत पारगः॥ सर्व वेदांत वि
त् कोटया विष्णु भक्तो विशिष्यते॥ १॥ वैष्णवानां सहस्रेभ्य एकांत्येको विशिष्यते॥ एकांते न स्तु पुरुषा गच्छंति य
र मं पदं॥ ८९॥ चौ०॥ महा दुराचारी हूं होई॥ कै अनन्य हरि भजै जु सोई॥ तो वाकों साधु ही जो निये॥ ति

वसिष्ठ

ह०भा०चं०॥
२७॥ ताहियचित्रमांनिये॥याविधिकोदृअर्जुनसाखी॥कृष्णचंद्रगीतामधिभाखी॥ततछिनधर्मात्मा[illegible]लीजे॥मे
परमशांतिकोंपावेसोई॥विजयसत्यकरितुकहियही॥कृष्णभक्तनकोनासनसही॥पापीकुजोभजनहि[illegible]
करही॥मेरेचरणशरणअनुसरई॥शूद्रवैश्यअथवाहोनारी॥होइमुक्तिपदकेअधिकारी॥विप्रा
जर्षिजुकरैसनेहा॥तेनवतरैंकछुनसंदेहा॥८४॥श्लोक॥अपिचेत्सुदुराचारोभजतेमामनन्यभा
क्॥साधुरेवसमंतव्यःसम्यग्व्यवसितोहिसः॥१॥क्षिप्रंभवतिधर्मात्माशश्वच्छांतिंनिगच्छति॥कौंतेय
प्रतिजानीहिनमेभक्तःप्रणश्यति॥२॥मांहिपार्थव्यपाश्रित्ययेपिस्युःपापयोनयः॥स्त्रियोवैश्यास्तथा
शूद्रास्तेपियांतिपरांगतिं॥किंपुनर्ब्राह्मणाःपुण्याभक्ताराजर्षयस्तथा॥८४॥चौ०॥नरहरिगुराए
माहिएहगाई॥जमभजइतनिनीतिसिखाई॥कृष्णचंद्रप्रभुपरमउदारा॥मोहिरुपानदियोअधि
कारा॥जेहरिगुरतैंविमुखसदाई॥तिनकोंदंडदेहिहमजाई॥जेहरिगुरपदवंदनकरई॥तिनकों
हमप्रणमअनुसरई॥८५॥नृसिंहपुराणे॥धर्मराजवाक्यं॥श्लोक॥अहममरगणार्चितेनधात्रायमइति
लोकहिताहितेनियुक्तो॥हरिगुरुविमुखान्प्रशास्मिमर्त्यान्हरिचरणप्रणतान्नमस्करोमि॥८५॥चौ०

जे हैं हरि के भक्त अनन्या॥ तिनमैं दोस द्रोह कछु अन्या॥ तो कदापि तिनकौं दोस दुखावै॥ जन तन्न्याव तै निकट
न आवै॥ शशि मैं जद्यपि कलंक दिखावै॥ तो कहा चंद्र दीप्ति मिरदावै॥ यह नरहरि पुराण की साखी॥ सो सुनि
भक्त नावै अभिलाखी॥८६॥श्लो०॥ भगवति च हरावनन्यचेता भृशमलिनोपि विराजते मनुष्यः॥ नहि
शशि कलुषच्छविः कदाचित्तिमिरपराभवतामुपैति चंद्र॥८६॥चौ०॥ मन क्रम वचन नेक रि मो पाही॥ वैस्नव
पराभव किये न जां ही॥ चक्र एक दिसि रछ्या करई॥ इक दिसि गरुड नकव हटरई॥ एक वोर तिहि पारखद
दौरैं॥ हरि रछ्या ताके चहुं वोरैं॥ वैस्नव पीडा करौ जु कोई॥ यह मेरी सामर्थ्य न होई॥ जमदूत न प्रति वचन
सुनावत॥ यह नरहरि पुराण विधि गावत॥८७॥श्लो०॥ करोमि कं मेण वाचा मनसापि न विप्रियं॥ वै
स्नवानां महाभागा सुदर्शनभयादपि॥१॥ एकतो धावते चक्रमेकतो हरिवाहनः॥ एकतो विस्नुदूताश्च
वैस्नवे चार्दिते मया॥८७॥चौ०॥ नंद नंदन वहु जन मद मारो॥ अति वड नाम को तव तु धारो॥ व्रह्मादेह
धरो मन नाकं॥ अथ वाप सुपंछी तनयां कुं॥ कृस्नदास यह नाम कहां कुं॥ पदपंकज वसे कुं गुन गाकुं॥८८॥
दशमे ब्रह्मस्कंतौ॥ श्लो०॥ तदस्तु मे नाथ स भूरि भागो भवेत्र वान्यत्र तु वा तिरश्चां॥ ये नाहमेको पि भव
ज्जनानां भूत्वा निषेवे तव पाद पल्लवं॥८८॥चौ०॥ संतन की महिमा को पारा॥ सव महिमा को करै विचारा॥

जद्यपि जथा बुद्धि मन दीये॥ अपनी निर्मलता केलीये॥ जो महिमां कछु संग्रह करी॥ सो ईरसना करि उ... बीजे॥ मे
री॥ दोऊ लोक जो जीत्यो चाहे॥ ऐसे सत संगति है तउ माहे॥ ८८॥ तत्र वाक्यं॥ श्लो०॥ अतः श्री भगवद्भक्तज ...न
नानां संगतिः सदा॥ कार्य्या सर्वैः प्रयत्नेन द्वौ लोकौ विजिगीषुभिः॥ ८९॥ चौ०॥ हरि के संतप्र भाव अन
ता॥ सत संगति महिमा न हि अंता॥ संतन कौ सत संग प्रधानां॥ साधन सुई अधिक कल्यानां॥ संत समा
गम सब सुख दांनी॥ महिमां यह पुरांण बखांनी॥ ९०॥ श्लो०॥ भगवद्भक्त पादाब्ज पादुकेभ्यो नमो नमः ...
यत्संगमः साधनं च साध्यं चाखिल मुत्तमं॥ ९०॥ चौ०॥ वैस्नव संगति करै जु कोई॥ ताके पाप नास सब हो
ई॥ हरि भक्तन की संगति पाई॥ अति पातकि हु मुक्ति के जाई॥ तहां कोइ शद्दि विधि लिख्यो प्रमांनो॥ वृह
द् नारदी वदत पुरांना॥ ९१॥ वृहन्नारदी पुराणे॥ श्लो०॥ हरि भक्ति पराणां तु संगिनां संग मात्रतः॥ मुच्यते सर्वे
पापेभ्यो महापातकवानपि॥ ९१॥ भक्त प्रसंग अनर्थ मिटावै॥ अर्थ प्राप्ति सत संग करावै॥ अपजस को स
त संग नसावै॥ निर्मल बुधि प्रतिष्टा पावै॥ वैस्नव दरस न अस फल दाता॥ पद्म पुरांण साखि विख्याता॥ ९२॥
पद्म पुरांणे॥ श्लो०॥ विनाशयत्यपयशो बुद्धिं विशदयत्यपि॥ प्रतिष्टापयति प्रायो नृणां वैस्नव दर्शनं
॥ ९२॥ चौ०॥ वैस्नव संग सकल सुख दांनी॥ सब तीरथ न तें अधिको जांनी॥ संग स्नांन सकल फल निधि को॥

संगमहातमसवतैंअधिको॥ यहमहिमांसवसुनौंसुजांनां॥ टीकहृतहैपद्मपुरांनां॥ ए३॥ पाद्मे॥ श्लो०॥ गंगा
दितुएपतीर्थेषुयोनरःस्नातुमिछति॥ यःकरोतिसतांसंगंतयोःसत्संगमोवरः॥ ए३॥ चौ०॥ सतसंगपरमधर
ममयरिद्धी॥ सतसंगतिकरियावैसिद्धी॥ जेजेदुर्लभवांछाकरई॥ संगमसाधमनोरथसरई॥ ए४॥ श्लो०॥ या
नियानिदुरायानिवांछितानिमहीतले॥ प्राप्यंतेतानिताम्येवसाधूनामेवसंगमात्॥ ए४॥ चौ०॥ सतसंग
तितैंसवसिधिफरई॥ अनरथहूकौंअर्थेहिकरई॥ संगसंसारवटांवनहारौ॥ संतसुसंगमुक्तिकोद्वारो॥
सवसतसंगमहातमजांनत॥ देवहूतिप्रतिकपिलवखांनत॥ ए५॥ तृतीयस्कंधेश्रीदेवहूतीवाक्यं॥
श्लो०॥ संगोयःसंसृतेर्हेतुरसत्सुविहितोऽधिया॥ सएवसाधुषुकृतोमोक्षद्वारमपावृतं॥ ए५॥ चौ०॥ सत
संगजगकोआनंददाई॥ सतसंगरूपचांदिनीछाई॥ सोकिंहिंकौनदेईआनंदा॥ सीतलहृदयकरैसुखकं
दा॥ जिहिकौरूपरसाइनमांनौं॥ काहिनआनंददेतवखांनौं॥ संतनकीमहिमांसुखमई॥ पद्मपुरांनसा
खिकहिदई॥ ए६॥ पाद्मे॥ श्लो०॥ रसायनमयीशीतापरमानंददायिनी॥ नानंदयतिकंनामवैष्णवाश्रय
चंद्रिका॥ ए६॥ चौ०॥ हैसतसंगमोक्षकोदाता॥ संतहितातमातअरुभ्राता॥ मैंयामधिसंसारभ्रमावै॥ अंत
जन्मतवहीजियपावै॥ जवहरिकृपाहोइसतसंगा॥ तवहीहरिपदराचरंगा॥ दयाममांहियदृढवचनसं

अनुहि कहत मुचकंद नरेसा ॥८७॥ दशमे मुचुकंदवाक्यं ॥ श्लो० ॥ भवापवर्गो भ्रमतो यदा भवेत् जनस्य
च्युत सत्समागमः ॥ सत्संगमो यर्हि तदैव सद्गतौ परावरेशे त्वयि जायते मतिः ॥८७॥ चौ० ॥ सर्व सार को सार बखा
नौं ॥ सो जग मै सतसंग हि जांनौं ॥ यह असार रूपी संसारा ॥ तामैं संत संग समागम सारा ॥ हरिभक्तन कौ यह है अ
मोनौं ॥ वृहद नारदी कहत पुरांना ॥८८॥ वृहन्नारदीपुरांणे ॥ श्लो० ॥ असारभूते संसारे सारमेतदजात्मज ॥
भगवद्भक्तसंगो हि हरिभक्तिं समिच्छतां ॥८८॥ चौ० ॥ संतसंग मय अमृत कहां हीं ॥ सागर तें तौ निकस्यो नां
हीं ॥ यह अलौकिक अमृत गायो ॥ ता महिमा को पार न पायो ॥ सागर ते वह अमृत निकास्यो ॥ महा कष्ट ता
कौं विसतार्यो ॥ विष हू कौ वह बंधु कहावै ॥ जन्म मरण भय नां हि मिटावै ॥ तातैं श्रेष्ठ अमृत यह जांनौं ॥ सं
तप भावन नहीं कछु छांनौं ॥ पुनि सतसंग रसायन रूपा ॥ सब रसांयन कौ यह भूपा ॥ महा कष्ट सौं वनै रसाय
नै ॥ भव भय रोग सकै सु मिटायनै ॥ सुलभ न मिलै सतसंग रसांइनै ॥ भावन भक्ति जुत हरिपद पाइनि ॥ परमा
नंद रूप सतसंगा ॥ जग को रंग सो चकौ अंगा ॥ जगत संग सब सोक रूप है ॥ संतसंग सुख सकल भूप है ॥ बरन्यौ
बरन्यौं पद्मपुरांण प्रसंगा ॥ यह सुनि कै करियो सतसंगा ॥८९॥ पद्मपुरांणे ॥ श्लो० ॥ असागरोत्थं पीयूषमद्रव्यं
व्यसनौषधं ॥ हर्षश्चाशोकपर्यंतः सतां किल समागमः ॥८९॥ चौ० ॥ हरि कथा अमृत करौ जु पांनौं ॥ सो सतसंगति

करौ सुजांनो॥ जीवन कों प्रसंग संतन को॥ है सुखदायक श्रवण रु मन को॥ श्रीहरिकथा रस मोहन रूपा॥ सतसंगति
तें लहै अनूपा॥ पद्मपुराण मांहि यह वांनी॥ नारद जू वरनी सुखदांनी॥१००॥ पद्मपुराणे नारदवाक्यं॥ श्लो०॥
प्रसंगेन सतामात्मा मनः श्रुतिरसायनाः॥ भवंति कीर्तनीयस्य कथाः कृष्णस्य कोमलाः॥१००॥ चौ०॥ भक्तिज्ञा
न होइ संत संगतैं॥ होइ भक्ति सत संग रंगतैं॥ सो प्राचीन सुकृत सौं मिलई॥ तब एह मन आनंद रस झिलई॥
वृहन्नारदी कहत प्रमांनो॥ सोई वचन चित धरो सुजांनो॥१०१॥ वृहन्नारदीपुराणे॥ भक्तिस्तु भगवद्भक्त
संगेन परिजायते॥ सत्संगः प्राप्यते पुंभिः सुकृतैः पूर्वसंचितैः॥१०१॥ चौ०॥ सर्वोपरि हरिजन सत संगा॥ उद्धव
सों प्रभु कह्यो प्रसंगा॥ गुह्य वचन यह सुनौं हमारो॥ उद्धव तू मम प्राणपियारो॥ जोग अष्टांग मुद्रिन बसि
करई॥ सांख्य कुमेरो मनन हि हरई॥ धर्म मोहि वस करै न क्यों हूं॥ वेद पढे वस होउं न त्यौं हूं॥ तप लनक सें हौं
न वस जैसें॥ त्याग कीयें हूं वस न हितै सैं॥ देवपूज्य वकु जग्य रचावैं॥ वापी कूप तडाग सचावैं॥ व्रत व कु
करैं दछिनादेई॥ इन तें मोहि न वस करि लेई॥ वलि वैस्वदेव करै व कुतांती॥ वेद पढैं नित दिन अरु राती॥ तीर्थ
यात्रा सकल लै कराही॥ यम नियम नि साधै मन मांही॥ इन साधन तें मैं वस नांही॥ यातें सत्य कहौं तुहि पांही॥ व
सी करण मो कों सतसंगा॥ उधवति कितैं [illegible]॥ एकादशस्कंध [illegible] कही है॥ इह करि उद्धव सुविधि

१०१॥ एकादशे श्रीहंसचंद्रवाक्यं॥ श्लो०॥ अथैतत्परमं गुह्यं शृण्वतो यदुनंदन॥ सुगोप्यमपि वक्ष्यामि त्वं मे भृ
त्यः सुहृत् सखा॥१॥ न रोधयति मां योगो न सांख्यं धर्म एव वा॥ न स्वाध्यायस्तपस्त्यागो नेष्टापूर्तं न दक्षिणा॥२॥
व्रतानि यज्ञाः छंदांसि तीर्थानि नियमा यमाः॥ यथावरुंधे सत्संगः सर्वसंगापहो हि मां॥१०२॥ चौ०॥ नेत्र पाय
कौ फल यह है॥ भक्तजनन कौ दरसन लहै॥ देह धरे कौ यह फल लीजे॥ भक्तन सौं आलिंगन कीजे॥ जिह्वा तौ
वह फल कहावे॥ हरिदासन के गुणगण गावे॥ इहि जग मो हि ला भ यह जानौं॥ संत समागम दुर्लभ मानौं॥
जन प्रह्लाद इहि धरणी कहई॥ महिमा भक्ति सुधोदय लहई॥१०३॥ हरिभक्ति सुधोदय ग्रंथे श्रीप्रह्लाद प्रति
धरणी वाक्यं॥ श्लो०॥ अक्ष्णोः फलं त्वादृश दर्शनं हि तन्वाः फलं त्वादृश गात्र संगः॥ जिह्वा फलं त्वादृश कीर्तनं हि
सुदुर्लभो [illegible] भागवता हि लोके॥१०३॥ चौ०॥ छिन भंगुर दुर्लभ यह नरतन॥ दुर्लभ हरि भक्तन को दरसन॥
नृपति विदेह वचन यह नीको॥ नव जोगेन प्रति श्रुति सब ही को॥१०४॥ एकादशे विदेह राजा वाक्यं॥ श्लो०॥ दुर्लभो
मानुषो देहो देहिनां क्षणभंगुरः॥ तत्रापि दुर्लभं मन्ये वैकुंठप्रियदर्शनं॥१०४॥ चौ०॥ हे हरि जे अनन्य तुम्हरे ज
न॥ कपट रहित निर्मल जिनके मन॥ तिनको संग नाथ मोहि दीजे॥ हि लि मिलि तिन हि ला भ यह लीजे॥ कथा सु
धारस पान करौं गो॥ अनायास भव सिंधु तरौं गो॥ चतुर घमे ध्रुव जूर सजीनी॥ प्रभु सों यह जाचना कीनी॥१०५॥ चौ०

चतुर्थस्कंधेश्रीध्रुववाक्यं॥श्लो०॥भक्तिंमुहुःप्रवहतांत्वयिमेप्रसंगोभूयादनंतमहताममलाशयानां॥येनां
जसोल्वणमुरुव्यसनंभवाब्धिंनेष्येभवद्गुणकथामृतपानमत्तः॥१०५॥चौ०॥हेहरितुवमायावसजोलों॥
कर्मनिमग्नभ्रमतहौंतोलों॥भक्तनकीसतसंगतिदीजे॥यहकृपानंदनंदनकीजे॥जन्मजन्मसंगतिसुखका
री॥यहीकृपामोहिकरोविहारी॥संतसमागमसोंमतिराची॥यहीप्रचेताप्रभुसोंजाची॥१०६॥चतुर्थस्कंधेप्रचेत
सांवाक्यं॥श्लो०॥यावत्तेमाययास्पृष्टाभ्रमामइहकर्मभिः॥तावद्भवत्प्रसंगानोसंगःस्यान्नोभवेभवे॥१०६॥चै
इत्यादिकयेवचनअनंता॥अतिअपारमहिमांनिधिसंता॥नरदेहीकौलाहोयहई॥हरिभक्तनकीसंगतिल
हई॥१०७॥चौ०॥कृष्णविमुखतेकहेअसंता॥तिनकोसंगनकरैंबुधिवंता॥विमुखसंगकरियनअसजांनी॥हो
इसकलसुरखारथहांनी॥नर्कजाततावकुविधिनरई॥अधोलोकमेंतेपरपरई॥१०८॥तत्रपुराणवाक्यं॥श्लो०
असद्भिःसहसंगस्तुनकर्तव्यःकदाचन॥यस्मात्सर्वार्थहानिःस्यादधःपातश्चजायते॥१०८॥चौ०॥अग्निज्वा
लचकुओरजरावै॥पीडासुतोसहतनमेंआवै॥कृष्णचिंतवनतेंजुविमुखजन॥तिनकेनिकटनवसिमूढम
न॥निकटवासकीज्वालनचावे॥पीडातासुसहीनहिजावे॥१०९॥कात्यायनऋषिवाक्यं॥श्लो०॥वरंहुतव
हज्वालापंजरांतर्व्यवस्थितिः॥नशौरिचिंताविमुखजनसंवासवैशसं॥१०९॥चौ०॥विप्रदेहतनमअसकु

वैस्नव नामैं रुचि नहिं जाई॥ तौ जो नियनीच न सिरमोरा॥ तिनसों संभाषण तजि बोरा॥ जो कदाचि संभासन है ... ते॥ मे
तौ सपरस की ज्यो मति कोई॥ जो सपरस कराचि होइ जाई॥ तिहिं को छेनक वकुन हि रवाई॥ पद्मपुराण मांहि थ
हवांनी॥ प्रिय गिरि जा प्रति सं तुव बांनी॥ ११०॥ पद्मपुराणे उत्तर खंडे यारवती प्रति श्री महादेव वाक्यं॥ श्लो०॥
अवैस्नवास्तु ये विप्रा चांडालादधमास्मृताः॥ तेषां संभाषणं स्पर्शं सोमपानादि वर्जयेत्॥ ११०॥ चौ०॥ ह
रि भक्ति कीनी नहिं चाइन॥ नित सिस्नोदर मांहि परायन॥ तिनको संग कवकुं को उ करई॥ नरक अंधतम मैं
ले गिरई॥ जसैं अंध अंध गहि हाथा॥ परत कूप मैं दोउ साथा॥ यह एकादश की है साषी॥ यही विचार हिं
धरि राषी॥ १११॥ एकादशे॥ श्लो०॥ संगं न कुर्याद् असतां शिस्नोदरतृपां क्वचित्॥ तस्यानुगस्तमस्यंधे पतत्यं
धानुगांधवत्॥ १११॥ चौ०॥ हरि भक्ति तैं रहित है जेई॥ मुख्य असंत जो लिये तेई॥ सदाचार नित करत विचा
रिय॥ उन्य कर्म तिहि करत निदारिय॥ तो हरि जन की निष्टा सोई॥ हरिजन चंद्र मेकवहु न होई॥ ११२॥ तत्र वा
क्यं॥ श्लो०॥ हरिभक्ति विहीना ये मुख्यासंतस्त एव हि॥ तेषां निष्टाशुना काऽपि न स्यात्सच्चरितैरपि॥ ११२
चौ०॥ हरि भक्ति विनु हीन जु कोई॥ वेद शास्त्र वकु जानत होई॥ कहा होइ करि तीर्थ वासा॥ कहा नमो तप क
रित न वासा॥ कहा नयो करि जग्य विधानं॥ वृहन्नारदी कहत पुरांनो॥ ११३॥ वृहन्नारदीपुराणे॥ श्लो०॥

किं वेदैः किमु वा शास्त्रैः किमु तीर्थनिषेवनैः॥ विष्णु भक्ति विहीनानां किं तपोभिः किमध्वरैः॥११३॥ चौ०॥ स
ब वेद न के अर्थ तहि जाने॥ सकल सास्त्र के अर्थ बखाने॥ जो पर तु हरि भक्त न होई॥ तौ नर सम अधम है सोई॥
कहो कह्यो ह्रय है विधानां॥ अगस्त्य वाक्य तन गरुड पुराणं॥११४॥ गरुड पुराणे॥ श्लो०॥ अधीतान्यपि वेदानां
सर्वशास्त्रार्थ वेद्यपि॥ यो न सर्वेश्वरे भक्तस्तं विद्यात् पुरुषाधमं॥११४॥ चौ०॥ कृष्ण बिमुख के प्रायश्चित कर
ई॥ प्रायश्चित तिन के पाप न हरई॥ मदिरा कुंभ जु नीरन होई॥ बरसदु जार गंग मैं धोई॥ गंगा जमुनी तन हि क
रई॥ त्यों न हि पाप प्रायश्चित हरई॥ कह्यो यहै विधि कही कहां है॥ अजामेल उपरव्यान जहां है॥११५॥ बख
जामिलो पाख्याने॥ श्लो०॥ प्रायश्चित्तानि चीर्णानि नारायणपराङ्मुखं॥ न निःपुनंति राजेन्द्र सुराकुंभमिवा
पगाः॥११५॥ चौ०॥ उनके पाप कौन कछ होंही॥ उनको मंगल लखै न त्योंही॥ जिनके मन मैं मंगलरूपा॥ जो
लौं बसे न कृष्ण स्वरूपा॥ विष्णु धर्मोत्तर ग्रंथ की बानी॥ मैं यहै लिखी सु मंगल दानी॥११६॥ विष्णु धर्मोत्तरे॥
श्लो०॥ कुतः पापक्षयस्तेषां कुतस्तेषां च मंगलं॥ येषां नैव हृदिस्थो यं मंगलायतनो हरिः॥११६॥ चौ०॥ कृष्ण
चरण तें बिमुख जु कोई॥ कथा श्रवन जिनि करी न होई॥ नरक पाय वे कौं मग गेहा॥ ताही में जिनि कस्यो
स नेहा॥ जिह्वा हरि गुन नहि उच्चरै॥ चितन कृष्ण पद सुमिरण करै॥ कृष्णचंद्र के चरन नि मांही॥ कब कृ

श्रवणंम कस्योजिहिनोहा॥ मेरैलोकतिनहिलन्त्रावो॥ दैदैत्रासनर्कनुगतावौ॥ छष्टस्कंधभागवतमाई॥
धर्मराजदूतनसमकाई॥११७॥ षष्टस्कंधेदूतानप्रतिधर्मराजवाक्यं॥ श्लो०॥ ताना नयध्वमसतो विमुखा
न्मुकुंदपादारविंदमकरंदरसादजस्रं॥ निष्किंचनैः परमहंसकुलैरसङ्गैर्जुष्टात्गृहे निरयवर्त्मनि ब
द्धतृष्णान्॥१॥ जिह्वान वक्ति भगवद्गुणनामधेयं चेतश्च न स्मरति तच्चरणारविंदं॥ कृष्णाय नो नमति
च्छिर एकदापि ताना नयध्वमसतोऽकृतविष्णुकृत्यान्॥११७॥ चौ०॥ नक्तजन नकीहांसीमाने॥ कलि
न्नि मो नति नहि श्रयमाने॥ अर्थधर्म जस अरुसुत जाके॥ एते सकल विनासे ताके॥ करहिमूढ जे
वैस्नव निंदा॥ जो नियतें नरश्चति मतिमंदा॥ पितर निलेसंगजमपुर जांही॥ जायपरैं पुनिरौरव मां
ही॥ यह विधिकहत सकंधपुरानो॥ वैस्नवनिंदासुनियनकानो॥११८॥ स्कंदपुराणे॥ श्लो०॥ यो हि
भागवतं लोकमुपहासं नृपोत्तम॥ करोति तस्य नश्यंति अर्थधर्मयशःसुताः॥१॥ निंदां कुर्वंति ये मू
ढा वैस्नवानां महात्मनां॥ पतंति पितृभिः सार्धं महारौरवसंज्ञिते॥११९॥ चौ०॥ ताडन त्रिंदा द्वेषकर
जो॥ वैस्नव देखि सराहै नहि जो॥ क्रोधकरै लखि हर्ष न सावै॥ खट अपराध पुराण जनावे॥
एअपराध शास्त्र खट धाई॥ तामे कोउ एक कछु करई॥ श्रवनसुन सकल ताकु ह्यहोई॥ नर्कपात पैहै

नरसोई॥ स्कंधपुराण यह लख्यो विचार॥ तातें तू यह गहि लै सार॥११९॥ स्कंधपुराणे॥ श्लो०॥ हंति
निंदति वै द्वेष्टि वैष्णवान्नाभिनंदति॥ क्रुध्यते याति नो हर्षं दर्शने पतनानि षट्॥११९॥ वैष्णव कों कोउ
किंकुं सतावै॥ जातें वैष्णव पीडा पावै॥ जनमै क्रूजंत कि ये सु न जोई॥ ताके सुकृत नष्ट सब होई॥ अमृत
सार उद्धार बखानी॥ सो विधि यह लिखि प्रगट बखानी॥१२०॥ अमृतसारोद्धारग्रंथे॥ श्लो०॥ जन्मप्रभृ
ति यत्किंचित्सुकृतं समुपार्जितं॥ नाशमायाति तत्सर्वं पीडयेत्तु हि वैष्णवान्॥१२०॥ चौपई॥ वै
ष्णव निंदा जो कोउ करई॥ ताको कष्ट शास्त्र यह धरई॥ बार बार लै तासु सरीर हि॥ जम के दूत करो
त नि चीरहि॥ सकल जन्म जो हरि कों सेवै॥ सो वैष्णव निंदा चित देवै॥ वैष्णव कों जु करत अपमानो॥
ता हि प्रसन्न न हि न जगबानो॥ यह द्वारिकामहात्म मांही॥ प्रगट बतावत गुप्त कछु नांही॥१२१॥ द्वा
रिकामहात्म्ये॥ श्लो०॥ करपत्रैश्च फाल्यंते सुतीव्रैर्यमशासनैः॥ निंदां कुर्वंति ये पापा वैष्णवानां म
हात्मनां॥१॥ पूजितो भगवान् विष्णुर्जन्मांतरशतैरपि॥ प्रसीदति न विश्वात्मा वैष्णवे चापमानिते॥१२१॥ चौ०॥ वैष्णव की निंदा श्रुति सुनई॥ हरि निंदा सुनि सीस न धुनई॥ महापाप ताकों वह लागै॥ तिनके संग रंग न हिय पागे॥ निंदा सुनत तजो नउ वि जाई॥ सुकृत पुन्य सब तासु नसाई॥ श्रीशुक

यह महिमां उच्चरी॥ सीख दई जन मंगलकारी॥१२२॥ दशमस्कंधे॥ श्लो०॥ निंदां भगवतः श्रृण्वन् तत्प
रस्य जनस्य वा॥ ततो नापैति यः सोपि यात्यधः सुकृताच्च्युतः॥१२२॥ चौ०॥ कृष्णभक्त कै हरिरस पीवै॥ पांच
चारि दिन हू जग जीवै॥ ताको जीवन सुफल सही है॥ महिमां स्कंध पुराण कही है॥ भक्ति विनां जीवै ज
ग मांही॥ जीवो कल्प हजार वृथा ही॥१२३॥ विष्णुधर्मोत्तरे॥ जीवितं विष्णुभक्तस्य परं पंच दिनानि च॥ न तु
कल्पसहस्राणि भक्तिहीनस्य केशव॥१२३॥ चौ०॥ ताते जो हरिपद अनुरागै॥ विमुखन की संगति नि
त त्यागै॥ संतसंगति सों रति सरसावै॥ कृष्णभक्त ह्वै संत कहावै॥ कोरे गंगांनी कोरे कमी॥ वे सतसंगति केन
हि मर्मी॥ दुष्टवासनां मेटैं संता॥ हियमे प्रेरि राधिकाकंता॥ देउपदेस सकल भ्रम हरैं॥ कृष्णचंद्र सौं सन
मुख करैं॥ संतन की महिमां मन हरनी॥ श्रीहरि जू उद्धव प्रति बरनी॥१२४॥ एकादशे श्रीकृष्णचंद्रवाक्यं॥
श्लो०॥ ततो दुःसंगमुत्सृज्य सत्सु सज्जेत बुद्धिमान्॥ संत एवास्य छिंदंति मनोव्यासंगमुक्तिभिः॥१२४॥ चौ०॥
कृष्णभक्त कंठी गलधारी॥ मुद्रा तिलक किये सुदकारी॥ दूरि तैं दरसत ह्वित चित धरीये॥ निकट आय पद वंद
न करीये॥१२५॥ श्लो०॥ अथ श्रीभगवद्भक्तान्संपन्नलक्षणविन्दु बितान्॥ गत्वा तान्दूरतो दृष्ट्वा दंडवत्प्रणमेन्मु
दा॥१२५॥ चौ०॥ वैष्णव कौं वैष्णव जो देषै॥ करत प्रणति हित यह है विसेषै॥ हरि दोउन के बीच विराज॥ तिन

हि दंडवत नु वपरिसाजै ॥ जो नन मैं सुनि लेकु विधानां ॥ हो तत हां हरि को अपमानां ॥ तेजो द्रविण पंचरात्रि को ॥
लिखो वचन लखहु हित जातिको ॥ १२६ ॥ तेजो द्रविण पंचरात्रे ॥ श्लो ॥ वैष्णवो वैष्णवं दृष्ट्वा दंडवत् प्रणमेद्द्विज ॥ उभ
योरंतरा विष्णुः शंखचक्रगदाधरः ॥ १२६ ॥ चौ० ॥ हरिजन आवत दूरि हि दरसै ॥ सनमुख जाय पाय न हि परसै ॥
द्वादस वरष जु पूजा करी ॥ तिहि को गी कृत करत न हरी ॥ [illegible] संत महातम आनंदकारी ॥ महिमा स्कं
दपुरां न उचारी ॥ १२७ ॥ स्कंदे ॥ श्लो० ॥ दृष्ट्वा भागवतं दूरात् सन्मुखे योन याति हि ॥ न गृह्णाति हरिस्तस्य
जो द्वादश वार्षिकी ॥ १२८ ॥ चौ० ॥ जाकु सदन संत पग धरई ॥ तिंहि सनमान गृहस्थ न करई ॥ ता गृहस्थ के
घर को पित्रा ॥ छाडत जांनि महा अपवित्रा ॥ वाको गृह समसान समांनां ॥ जानि त यानक तजत सुजा
नां ॥ स्कंदपुराण वचन यह जांनी ॥ मार्कंडे रिषि कहत वखानी ॥ १२० ॥ स्कंदपुराणे मार्कंडेय वाक्य ॥
श्लो० ॥ यो न गृह्णाति नृपाल वैष्णवं गृहमागतं ॥ तद्गृहं पितरः त्तिः स्यक्तं श्मसानमिव नीरसं ॥ १२८ ॥ चौ०
जाके गेह संत जन आवै ॥ गृह हीन तें सनमान न पावै ॥ सेवा बिनु जे विमुख पठावै ॥ सत वर्ष न के पुन्य न सावै ॥ इ
हि विधि कहत पुराण सकंधा ॥ जानन हि विमुख मद अंधा ॥ १२९ ॥ स्कंधपुराणे ॥ श्लो० ॥ अपूजितो यदा गच्छे
द्वैष्णवो गृहमेधनः ॥ शतजन्मार्जितं पुण्यमादाय गच्छति ॥ १२९ ॥ चौ० ॥ हरि को भक्त विप्र जो दीसै ॥ ताहि

२१ देखि नहि नावत सीसे ॥ तिन कौ पूजन करि नहि छके ॥ तिहि पापहि हरि सहि नहि सके ॥ स्कंदपुराण
कहत महातमे ॥ विधि नहि ग्रहै अधम कोति हि सम ॥ १३०॥ स्कंधे ॥ श्लो० ॥ दृष्ट्वा भागवतं विप्रं नमस्का
रेण नार्चयेत् ॥ देहिनस्तस्य पापस्य न च वेत्तमते हरिः ॥ १३०॥ चौ० ॥ पहलें वैस्नव कौं सनमानैं ॥ पीछे तासुश्र
व ष्या गानै ॥ महापातकी जानौं सोई ॥ वाकौ वंस सहित षय होई ॥ स्कंदपुराण सुविधि सुनि लीजे ॥ सं
१३१ तन कौ आदर नित कीजे ॥ स्कंधे ॥ श्लो० ॥ दृष्ट्वैव हृत्वा तु सन्मानमवज्ञां कुरुते तु यः ॥ वैस्नवानां महीपा
ल सान्वयो याति संक्षयं ॥ १३१॥ चौ० ॥ वैस्नव कौं आवत जब जानै ॥ उठि आदर सेवा नहि ठानै ॥ वही ना
रकी जीव सही है ॥ साषी पद्मपुराण कही है ॥ १३२॥ पाद्मे ॥ श्लो० ॥ वैस्नवं जनमालोक्य नाभ्युत्थानं करोति
यः ॥ प्रणयादरतो विप्र स नरो नरकातिथिः ॥ १३२॥ सब संपति जुत है ग्रहस्थ घरै ॥ पुत्र कलित्र बंधु सब सु
ख करै ॥ ऐसे भवन मांहि हरिदासा ॥ कबहुं आइ न करैं निवासा ॥ लिपटे सांप मलयगिरि जैसें ॥ तो व भवन
जानिये तसें ॥ किहूं कौं मके वैष्वरनाही ॥ पृथु वानी चतुरथ के मांनी ॥ १३३॥ चतुर्थे स्कंधे पृथुवाक्यं ॥ श्लो० ॥
मा लालयद्द्रुमाहृते प्परिक्ताखिलसंपदः ॥ यद्गृहास्तीर्थपादीयपादतीर्थविवर्जिताः ॥ १३३॥ चौ० ॥ संत कृ
पा करि भवन पधारै ॥ हाथ जोरि निहि विनय उचारै ॥ आजु धन्य मोहि कियो कृपाला ॥ आजु जन्म यो कृतकृत

दयालु॥ मेरैं घर प्रभु आज पधारे॥ अति दुर्लभ नहैं दरस तुम्हारे॥ जसो है हरिको पद परसनै॥ ते सो ही है तुम्हरौ
दरसन॥ असी भांति वीनती करई॥ यह महिमा स्कंद उच्चरई॥१२४॥ स्कंदे॥ श्लो०॥ धन्योहं कृतकृत्योहं यतस्
त्वं गृहमागताः॥ दुर्लभं दर्शनं नूनं वैष्णवानां यथा हरेः॥१२४॥ चौ०॥ अधनी हू वे धनी वखानैं॥ जिहि घर
संत हरि आदर वानैं॥ आसन जल विधिवत सनमानैं॥ अधनी हू विधन्य प्रमानै॥ संतन की महिमा मन हरनी॥
पृथु राजा चतुरथ मे वरनी॥१२५॥ चतुर्थस्कंधे सनकादीन् प्रति पृथु वाक्यं॥ श्लो०॥ अधना अपि ते धन्याः
साधवो गृहमेधिनः॥ यद्गृहा ह्यर्हवर्याम्बु तृण भूमीश्वरावराः॥ चौ०॥ वैष्णव कों जो सनमुख जाई॥ दरस
न करै सी स पद नाई॥ पेंड पेंड फल होइ जग्य सम॥ कहत स्कंद पुराण महातम॥१२६॥ स्कंदे॥ श्लो०॥ स
न्मुखं व्रजमानस्य वैष्णवानां नराधिप॥ पदे पदे यज्ञफलं प्रोक्तं पौराणिका द्विजाः॥१२६॥ चौ०॥ प्रत्तछि परो
छि भक्ति मन लाई॥ वैष्णव जन की करो वडाई॥ महापापी हू जो नर होई॥ घोर पाप तें छूटै सोई॥ कृपा
वासुदेव की पाई॥ सो भवसागर कों तरि जाई॥ संतन की महिमा मन लाई॥ लिखि पुराण ति मध्य सुहाई॥
१२७॥ पुराणे॥ श्लो०॥ प्रत्यक्षं वा परोक्षं वा ये प्रशंसंति वैष्णवं॥ प्रसादाद्वासुदेवस्य ते तरंति महार्णवं॥१॥

वत्पत्तंवापरीत्तंवायेप्रशंसंति वैष्णवं॥ब्रह्महामद्यपस्तेयीगुरुगामीसदानृणं॥२॥मुच्यतेयात
कोत्सद्यो विष्णुरादन्नपोतम॥१३७॥चौ०॥श्रद्धाकरिकैंपाकवनावै॥वैष्णकोंवहेश्रन्नजिमावै॥
वैष्णवउदरमधिजोपरई॥ताकोपुन्यश्रमितविस्तरई॥मेरुसमांनश्रन्नसोहोई॥दिनदिनप्रतिफ
लतहेजुसोई॥श्रमृतसारउद्धारवखांनत॥सुफलतहे यहमहिमाजांनत॥१३८॥श्रमृतसारोद्धारे
श्लो०॥श्रद्धयादत्तमन्नंचवैष्णवाग्निषुजीर्यति॥तदन्नंमेरुणातुल्यंभवतेचदिनेदिने॥१३९॥चौ०॥दि
वकार्यहितजोकछुकरे॥श्राद्धादिकपितरनिश्रनुसरे॥तादिनकोउवैष्णवदिसेई॥पितरनिजाइवहींचे
सोई॥१३९॥श्लो०॥दैवेपैत्रेचयोदद्याद्धरिमाचंतुवैष्णवे॥सप्तोदधिसमंन्नंत्वापितृणामुपतिष्ठति॥१३९॥
चौ०॥जेहरिजनहरिपूजनकरई॥कल्पनामरसनोउच्चरई॥श्रैसेवैष्णवसेवैजोई॥पापीहूकोंसदगतिहो
ई॥वृहदनारदीकहतपुरांनां॥यहविधिलहेसुपरमसुजांनां॥१४०॥वृहद्नारदीये॥श्लो०॥हरिपू
जारतानांचहरिनामरतात्मनां॥शुश्रूषानिरताथांतिपापिनोपिपरांगतिं॥१४०॥चौ०॥जोनिहकांमसं
तपहलावै॥श्रद्धाजुतभोजनकरवावै॥पहलैकुलइकईसपगावै॥श्रापसहितसोहरिपुरपावै॥वृहद

नारदी पुनि यह भाषे ॥ सुनि यह सार विदि ये धरि राषे ॥१४१॥ श्लो० ॥ यो विष्णु भक्तान् निष्कामान् भोजयेत्श्र
द्धयान्वितः ॥ त्रिः सप्तकुलसंयुक्तः स याति हरि मंदिरं ॥१४१॥ चौ० ॥ जाको अन्न भक्त जन भोगें ॥ श्री हरि ताहि
आप आरोगें ॥ लिंग पुराण माहि यह देखी ॥ वचन लिख्यो मैं भाव विशेखी ॥१४२॥ लिंगे ॥ श्लो० ॥ नारायणप
रो विद्वान् यस्यान्नं प्रीतिमान् स ः ॥ अश्नाति तद्धरेरास्ये गतमन्नं न संशयः ॥१४२॥ चौ० ॥ भक्ति हीन जो होइ कु
लीनां ॥ पंडित जप तप मांहि प्रवीनां ॥ ताके सब गुन जांनों ऐसे ॥ मृतक देह को मंडन जैसे ॥१४३॥ हरि भक्ति सु
धोदये ॥ श्लो० ॥ भगवद्भक्ति हीनस्य जाति शास्त्रं जपस्तपः ॥ अप्राणस्येव देहस्य मंडनं लोकरंजनं ॥१४३॥ चौ० ॥
तातें सर्व प्रयत्न करिकें ॥ वैष्णव सेवा करि हित धरिकें ॥ वैष्णव सेवा जो जन करिहैं ॥ सो नर दुख समुद्र तें तरि
हैं ॥१४४॥ श्लो० ॥ तस्मात्सर्व प्रयत्नेन वैष्णवान् पूजयेत्सदा ॥ सर्वं तरति दुःखौघं महाभागवतार्चनात् ॥१४४॥
चौ० ॥ परिचर्या में आदर राषे ॥ सब अंग नवं दन अभिलाषे ॥ सब ग्रामो कों सम करि जांनै ॥ मो तें भक्त अधिक
सनमांनै ॥ मेरे भक्तन सों हित जाके ॥ उद्धव हों निहिचै बस ताके ॥ कमल चंद्र निज मुख तें कही ॥ सोई वानी द्र
ढ मै गही ॥१४५॥ श्लो० ॥ आदरः परिचर्यायां सर्वांगैरभिवंदनं ॥ मद्भक्तपूजाभ्यधिका सर्वभूतेषु मन्मतिः ॥१४५॥
चौ० ॥ नारी कोउ जु सुहागनि होऊ ॥ अथवा कोऊ विधवा है सोऊ ॥ तिन मैं जो वैष्णव ता धारै ॥ कुल इक्कोत

रसैसो तारै॥ ताको जन्म सुफल जग जानै॥ महिमा ब्रह्मपुराण बखानै॥ १४६॥ ब्रह्मपुराणे॥ श्लो०॥ सनत्कुमार उवाच किंवा
धेवा विष्णुभक्तिं करोति या॥ समुद्धरति चात्मानं कुलमेकोत्तरं शतं॥ १४६॥ चौ०॥ हरिभक्ति रसमगन जु कोई॥ स
बजग मांहि नरोत्तम सोई॥ दुराचार कु जो कहूं करई॥ अथ सदा चार चित धरई॥ तिनकों वार वार प्रणामं॥ हरिभ
क्त संतत सुखधामं॥ बृहद नारदी को यह साखी॥ निश्चै मांनि हिय धरि राखी॥ १४७॥ बृहन्नारदीये॥ श्लो०॥ हरि
भक्तिरसास्वादमुदिता ये नरोत्तमाः॥ दुर्वृत्ताः वा सुवृत्ता वा तेषां नित्यं नमो नमः॥ १४७॥ चौ०॥ सब जल जीव हि ब
क गिलि जाई॥ मिंडूक हि कबहूं नहि खाई॥ त्यों जम दंड सबन कों करई॥ हरि भक्त कों देषत डरई॥ यो ब्रह्मवादसं
हिता कहै॥ हरि भक्तन कों काल न गहै॥ १४८॥ ब्रह्मवादसंहितायां॥ श्लो०॥ बको जलचरान् भक्षन् मंडूकादी
न् विवर्जयेत॥ तथा यमः सर्वहंता वर्जयेत् हरिसेवकान्॥ १४८॥ चौ०॥ इहि जग मांहि कहा अति मिष्टा॥ प्रभु अ
र्पित जु से सब ही इष्टा॥ ता हू तैं अति मिष्ट कहा है॥ हरि नामावलि मधुर महा है॥ इहि तैं मधुर सु औरु कछ रे ये॥
हरिदासन को दरसन कहिये॥ यातैं मिष्ट और कहि देहू॥ संतन को चरणांमृत लेहू॥ इहि सम आन मीठो कछु और
रा॥ हरि भक्तकी रूगनि को रा॥ याकी साखि कहो कहां गाई॥ श्रीधर स्वामी बरनि सुनाई॥ १४९॥ श्रीधरस्वामी
कृतं॥ श्लो०॥ किं मिष्टं मधुवैरिणो धरसुधासिक्तं स्वभक्तार्पितं तस्मान्मिष्टतमं च किं मुररिपोर्नामावलीकीर्त्तनं॥

तस्मान्निष्टतमं चक्किं भगवतो भक्तस्य संदर्शनं तस्मान्निष्टतमं चक्किं पदस्तुधातन्दुक्तशेषामृतं ॥१४९॥ चौ० ॥ जा
की वैस्नव संग्या होई ॥ वैस्नव अन्न प्रीति करि सोई ॥ प्रारथना करि भोजन करई ॥ इहि विधि महा मोद मन भरई ॥ जो
कोउ वैस्नव नाम कहावै ॥ अन्न अवैस्नव को न दिपावै ॥ अंगीकार सु अन्न न करई ॥ कूर्मपुराण वचन उच्चरई ॥१५०
कोमी ॥ श्लो० ॥ वैस्नवानां हि भोक्तव्यं प्रार्थ्यान्नं वैस्नवैः सदा ॥ अवैस्नवानामन्नं तु परिवर्ज्यं ममेध्यवत् ॥१५०॥ चौ०
वैस्नव अन्न अंगीकृत कीजे ॥ प्रारथना करिकैं फुनि लीजे ॥ सब अपराध हरि करि देई ॥ वैस्नव अन्न लेत छिन तेई ॥
अन्न न मिलय तो असैं कीजे ॥ जल ही तहां मांगि कैं पीजे ॥ वैस्नव अन्न प्रभाव अपारा ॥ पद्मपुरान वखानत सारा ॥
१५१ ॥ पाद्मे देवदूत विकुंडल संवादे ॥ श्लो० ॥ प्रार्थयेद्वैस्नवादन्नं प्रयत्नेन विचक्षणः ॥ सर्वपापविशुद्ध्यर्थं तदभा
वे जलं पिबेत् ॥१५२॥ महापातकी जो नर होई ॥ वैस्नव धाम जाय कैं सोई ॥ वैस्नव अन्न अमृत तैं सिरै ॥ तिहि की जाय
जाचना करै ॥ अन्न मिलै तौ हित करि लेई ॥ परम पवित्र जो निकैं जेई ॥ अन्न तहां जो ना हि न मिलई ॥ तहां मांगि कैं
पीजे जलहीं ॥ सकल पाप तें छूटैं तेई ॥ नारद रिषि यह विधि कहि देई ॥१५२॥ नारदीये ॥ श्लो० ॥ महापातकसंयु
क्तो व्रजेद्वैस्नव मंदिरं ॥ याचयेदन्नममृतं तदभावे जलं पिबेत् ॥१५२॥ चौ० ॥ भागवतन को अन्न पवित्रा ॥ जसैं उनी
त गोविंद चरित्रा ॥ गंगा जू को वारि पुनीता ॥ जैसैं गिरवरधर के गीता ॥ परम सुद्ध चित पवनु मैं लाग्यो ॥ हरि के

हेतमोहमदत्याग्यो॥एकादशी सुद्धव्रत यहई॥ याकों नर निश्चै करि गहई॥ एचास्योंविधिरिषिमुखभाखी॥मार
कंडेय भगीरथ साखी॥१५३॥स्कंदे मार्कंडेय भगीरथ संवादे॥श्लो०॥शुद्धं भागवतस्यान्नं शुद्धं भागीरथीजलं॥
शुद्धं विष्णुपरं चित्तं शुद्धमेकादशीव्रतं॥१५३॥चौ०॥वैष्णव होए हरि ष्प्रर तिजो जन॥करहि अवैष्णव के गृह भोज
न॥पीवत हां जल ही विनु जानै॥ ताको प्रायश्चित वखानै॥चांद्रायण व्रत करै जु सोई॥तिहि पाप तैं सुद्ध तब हो
ई॥इष्टापूर्त्ति पुन्य सब वाके॥किये अन्यथा निर्फल ताके॥यह स्कंद महि मां लिखि दीनी॥मार्कंडेजू वर्नन कीनी
१५४॥श्लो०॥अवैष्णवगृहे भुक्त्वा पीत्वा वाज्ञानतोपि वा॥शुद्धिश्चांद्रायणे प्रोक्ता इष्टापूर्तं वृथा सदा॥१५४॥चौ०॥
काय वचन मन करि रत जे हैं॥ हरिचंद्र के सेवक ते हैं॥तिनकी आग्या मांनिये असें॥ कह्यो हरि को कीजिये
जैसें॥हरि मां हि परतु भक्त न मांही॥ रंचक भेद मांनिये नांही॥स्कंद पुराण प्रगट भाव वखांनै॥यह जानै सोई स
व जानै॥१५५॥स्कांदे॥श्लो०॥कर्मणा मनसा वाचा ये चेयंति सदा हरिं॥तेषां वाक्यं नरैः कार्यं ते हि विष्णुसमा नराः
॥१५५॥हम न विप्र न हि छत्रि सद्री हैं॥ वैस्य नांहि हम सूद्र नहीं हैं॥ नहि हम ब्रह्मचरय व्रतधारी॥ नां हि ग्रहस्था
श्रम अनुसारी॥ वांनप्रस्थ हम नहि न उदासी॥हम पुनि नांहि कवहुं संन्यासी॥ पूरण परमानंद अनुपा॥ अमृत स अ
मुद्र मधुर रस रूपा॥जो गोपीजन वल्लभ प्यारो॥कोटिक मनमथ मोहन हारो॥तिनके चरन कमल के दासा॥

भावभक्ति हियसरसनिवासा॥ तिनको दासनिदासकहाऊं॥ जन्मजन्ममेयहगतिपांऊं॥ पद्यावलियोंकह्योवहो
री॥ यहमोमतिहितदेहुकिशोरी॥ दोहा॥ चरणहमारोनाहिकछु आश्रमहूनसुदाय॥ जगमैंनिर्नयअवलंब
दासनिदासकहाये॥ १५६॥ पद्यावल्यां॥ श्लो०॥ नाहंविप्रो नचनरपतिर्नापिवैश्योनशूद्रोनोवावर्णीनचगृह
थे पतिर्नोवनस्थोयतिर्वा॥ किंतुप्रोद्यन्निखिलपरमानंदपूर्णामृताब्धेर्गोपीभर्त्तुःपदकमलयोर्दासदासानुदासः
१५६॥ चौ०॥ कितेकग्यांनअवलंबनकरहीं॥ केतककर्मनहीकोंअनुसरहीं॥ हमसोंजोकोउपूछैंआई॥ तासोंइ
हहमकहैंसुनाई॥ हमनहिग्यानकर्मकोंजांनै॥ साधनऔरकछूनहिमांनै॥ पादत्राणहरिदासनकेरे॥ सा
धनसिधिएईहैमेरे॥ दोहा॥ ग्यांनकर्मकोउगहिरहेअपनीरुचिअनुसार॥ मोकोंतोहरिदासकेजोरिनकोंआधि
कार॥ १५७॥ श्लो०॥ ज्ञानावलंबकाःकेचित्केचित्कर्मावलंबकाः॥ वयंतुहरिदासानांपादत्राणावलंबकाः॥ व
॥ १५७॥ चौ०॥ प्रतिमांमांहिसिलामतिआंनैं॥ श्रीगुरतिनकोंनरकरि जांनैं॥ जातिबुधिवैलवमेकरई॥ हरि
चरणोदिकजलचितधरई॥ संतनकोंचरणोदिकसारा॥ ताहिकरैजलबुद्धिविचारा॥ कलनामसवपा
तकहारी॥ मंत्रजापहरिकोसुखकारी॥ तिनकोंसाधारणकरिमांनै॥ अछिरबुद्धिजुतिनमेंगांनै॥ हरि
समस्तरिवनकेस्वांमी॥ सर्वेस्वरप्रभुअंतरजामी॥ औरदेवसमतिनकोंगिनई॥ निश्चै जांनिनारकी

तिनई॥ भक्तिसुधोदयमहिमांकही॥ यहविधिमांनिलीजीयोसदी॥१५६॥ हरिभक्तिसुधोदयग्रंथे॥श्लो०॥ उ
च्चैर्विश्लेषितस्ताधीतेत्थु नरमतिर्वैत्लवेजातिबुद्धिर्विलोर्वा वेल्लवानांकलिमल्लमथनेपादतीर्थैर्बुबुद्धिः॥
कंसारेर्नाम्निमंत्रेसकलकलुषहेत्री वृत्सामान्यबुद्धिर्विल्मौसर्वेश्वरेशेतदितरसमधीर्यस्यवानारकीसः॥
१५७॥ चौ०॥ संतनकीमहिमांजुविसेसा॥ वरनिसकतनहिंसेसमहेसा॥ महिमांजदेयिजथामतिवरनीः
मधुरमंजुमुदमंगलकरनी॥१५९॥ केसेवरनौंसकलमहातम॥ अल्पबुद्धिअतिमंदउरातम॥ खग
कीचंचुपुटीमधिजलनिधि॥ सवहीकहौंसमायकेसीविधि॥१६०॥ त्योंहीसंतप्रभावअगाधा॥ मेकछु
गायोमेटनबाधा॥ संतकृपाविनसद्गतिनांही॥ प्रीतिनहोइजुगलपदमांही॥१६१॥ तातेंसंतसमागमकीजे॥
नरतनताहिसुफलकरिलीजे॥ सतसंगतिसवसुखकोसारा॥ यहैकहतहौंवारंवारा॥१६२॥ सतसंगतितेंबुद्धिप्रका
से॥ सतसंगतितें भवभयनासै॥ सतसंगतिसमऔरकहाहे॥ लहसिद्धिसवजोजोचाहै॥१६३॥ याहीतेंहरिभक्ति
हिपावें॥ जाकोंब्रह्मादिकललचावें॥ भक्तिसमांनपरमउरधारय॥ सुहीजीवकोसांचोस्वारथ॥१६४॥ नरतन
लाभसकलजगमांही॥ भक्तिसमांनआंनकछुनांही॥ महागंभीरभक्तिरससागरे॥ ताकैवसनाचतनटना
गरै॥१६५॥ रससागरगंभीरयहीहै॥ याकोपारावारनहीहै॥ तदपिआपनेंमनसमझावन॥ विंदुमात्रलिखि

ह्वोंश्रुतिपांवन॥१६६॥महानुभावनिवकुविस्तारी॥आस्वादन कियो हित हियधारी॥खरुसंतनिको इठग
हिसरनो॥प्रथमभक्तिदुर्लभतावरनौं॥१६७॥इहिसंसार अनंतजीवगन॥लख चोरासी भ्रमत भ्रमित मन॥जी
व स्वरूप शास्त्र दृग चह्यो॥अतिसूक्षम तैंस्तत्तम कह्यो॥१६८॥तिनजीवन के है विधि भेदा॥थावरजंगम वरनत
वेदा॥जंगमहू..भिद घनेंई॥है अकासचारी कितनेंई॥१६९॥पंछीवृन्द तिकुजाति अनंता॥गनत गनत क
कुंल हियन अंता॥कितनें इक तिन मैं जलचारी॥तिनकी अगणित जाति निकारी॥१७०॥ताथी है थलचारी
कछु कहीये॥तिनकुं कैंथारन लहिये॥तिनकि वीच विचारि जु देषै॥मनुषि जाति थोरेइ हि लेषै॥१७१॥ओर सरीरव
हूत जग होई॥मनुज देह थोरे जग सोई॥ओर देह जग वहुत उपजाही॥तेसे मनुजन की कछु नांही॥१७२॥
देखि करि विचार तिन मांही॥वकुतक जाति नीचदर सांही॥म्लेछ पुलिंद वोद्ध कितनेंई॥तिन तैं नीच ओरात
तनेंई॥१७३॥आधे तो इहि नांति निकारो॥आधि रहे सुति नहि विचारो॥वेद निष्ट तिन मे वकुतेरे॥वेद पटे
अस कहे घनेरे॥१७४॥विधिवत कर्म करैं कछु ऐसे॥वेद विमुख चलें कछु उनि तैसे॥वेद निषेध पाप जे क
हे॥कितनेंई पाप कर्म गहि रहे॥१७५॥वेदोक्त कर्म करत हैं जिन मैं॥कर्म निष्ट वकुतेरे तिन मैं॥कर्म निष्ट
को टिन मै धि कोई॥विरवयनि त्यागि मुमुक्षु होई॥१७६॥कोटि मुमुक्षु होंहि जितेका॥ग्यांन निष्ट तिन मैं कोउ एका॥

कोटिक ग्यांन निष्ट मधि लहिये॥ जीवनमुक्त एक कोउ कहिये॥१७७॥ कोटिक जीवनमुक्तन मांही॥ कृ
ष्नभक्त विरले दरसांई॥ कृष्नभक्त तेई हैं निःकांमा॥ कृष्नभक्त सब सुख के धामा॥ यातें कृष्नचरण रति
वंता॥ जुगलभक्त सोई कहीय संता॥ भुक्ति मुक्ति सिधि चाहि न चाहै॥ केवल प्रेमानंद उमाहै॥१७८॥ भु
क्ति मुक्ति सिध्यादिक चाहै॥ जो नौं तिन हि अ संत महा है॥ ताकी साखि भागवत यह्ही॥ सुक सों नृपति परी
छत कही॥१७९॥ श्रीभागवते षष्ट स्कंधे परीक्षित वाक्यं॥ श्लो०॥ मुक्तानामपि सिद्धानां नारायणपराय
णः॥ सुदुर्लभः प्रशांतात्मा कोटिष्वपि महामुने॥१८०॥ भ्रमत भ्रमत ब्रह्मांड जु कोई॥ बड भागी सु जी
व है सोई॥ कृष्ण कृपातें कृपाकर हि गुर॥ भक्ति लता को बीज लहै उर॥१८१॥ याको भाव विचार हि कर
ई॥ श्रीगुरपद पंकज उर धरई॥ कृष्णचंद्र अपनायो चाहै॥ तब जो यह हिय रहि नांति न माहै॥१८२॥ गुर
सन मुख कै वे की बुधि॥ औरै तब हि होत मति सुधि॥ जब सद्गुर सरनै आवै॥ तब से सद्गुर कौन कहावै॥
१८३॥ जुगल मांहि जिन को दृढ भावा॥ साचो नों नोदित चित चावा॥ ऐसे भावक सद्गुर कहिये॥ ऐसे
गुरु की सरणैं लहिये॥१८४॥ तब सेवक हिय मेदित ठरई॥ भक्ति बीज आरोपण करई॥ सिखि को हृद
य भूमि तिहि जानैं॥ माली श्रीगुरदेव वखांनै॥१८५॥ श्रवण कीरतन जल सींचें जब॥ भक्ति बीज

४ लपटाई॥ तहांके नि विस्तार दिपाई॥ भक्तिलता ४

उलहे सिखि उरतेव॥ भक्तिलताको अंकुर कहे॥ सिखि कें हियें प्रेम सोई वढे॥१८६॥ असी लता लहै व
ढवारा॥ भेदि ब्रह्मंड होइ सो पारा॥ विरजा ब्रह्मलोक पर जाई॥ परमव्योम तांई सरसाई॥१८७॥ इन लोकन
की चाह न अंगें॥ यह इसव निभेदि वो जांने॥ परमव्योम हू कें तहां उपरें॥ पहुंचे भक्तिलता सवी परें॥१८८॥
वृंदावन गोलोक जहां है॥ कृष्णचरण तरु कल्प तहां है॥ तिनसों जाइ लता रसकुसमनि पागे॥ प्रेमरूप फ
लताकें लागे॥१८९॥ तिहि माली गुरसी च्यो करई॥ श्रवण कीरतन रस जल हरई॥ छिहि विधि लता लहै वि
स्तारा॥ सजल हरित वाढे वढवारा॥१९०॥ मत्त दुरद्द वैसव अपराधा॥ सोई गज करै लताकों वाधा॥ वढ हा
थी जो लता उखारे॥ मोरि मीडि धरनी पर डारे॥१९१॥ तिहिं हाथी सों लेइ वचाई॥ तो निरविघन लता गहराई॥ या
को नाव यहै हियधरई॥ वैसव दोष कवहु नहि करई॥१९२॥ कायक वाचिक मनकुं न धरिये॥ वैसव दोष
करत जिय डरिये॥ उपसाखा जव कटै अपारा॥ भक्तिलता न लहै वढवारा॥१९३॥ भुक्ति मुक्ति वांछा मरमा
वै॥ लाभ प्रतिष्ठा चित ललचावै॥ इत्यादिक उपसाषा जाने॥ भक्तिलता वाधक लखि मांने॥१९४॥ ये उप
साखा वढत विचारै॥ अरु चित शस्त्र करि काटि निवारै॥ भुक्ति मुक्ति रुचि मन नहि मांनै॥ इनकी स्वहानु
क्षकरि जांनै॥१९५॥ तव मूलसाखा वढि जाई॥ वृंदावन सुजाय फलराई॥ तिहिं लता कें प्रेम स्वरूपा॥

ला०चं०
२७
फलयरिपक्व सुद्धो रस अनूपा॥१९६॥ सो इफलयपक्यो भूमियर गिरई॥ मालीतिहि आस्वादन करई॥ माली श्री
गुरदेव प्रमानौ॥ तिहिं लतिका अवलंब कजानौं॥१९७॥ कृस्न चरण सुरतरु सों जाई॥ तब सोई लता जा
इलपटाई॥ कृस्न चरण सुरतरु जिहि सेई॥ प्रेम सुफल आस्वादन लेई॥१९८॥ यही परम फल यह पुरुषा
रथ॥ इहिं समान कछु औरन स्वारथ॥ मुक्ति धर्म पुनि अरथ रु कांमा॥ च्यारयों फल सब ही सुखधामा॥२००॥
प्रेम सुफल आस्वादन आगैं॥ तृण सम तुछ च्यारि च्यारि फल लागैं॥ सुद्ध भक्ति प्रेम फल लहि है॥ सुद्ध भ
क्ति को लछिण यहै है॥२०१॥ अन्य बांछा चित न हि धरई॥ आंन देव पूजा न हि करई॥ ग्यान कर्म मैं चित न दे
ई॥ विषय नितैं मन वसि करि लेई॥२०१॥ हृदै अनुकूल सकल इंद्रि गनै॥ कृस्न चरण अर्पित करियेमनै॥
सुद्ध भक्ति रढ दिय मोई॥ प्रेमा भक्ति उदय तब होई॥२०२॥ पंचरात्रे॥ श्लोक॥ सर्वोपाधि विनिर्मुक्तं तत्पर
त्वेन निर्मलं॥ हृषीकेण हृषीकेश सेवनं भक्तिरुच्यते॥१॥ श्री भागवते॥ सालोक्य सार्ष्टि सामीप्य सारूप्यैकत्व
मप्युत॥ दीयमानं न गृह्णंति विना मत्सेवनं जनाः॥२॥ स एव भक्तियोगाख्य आत्यंतिक उदाहृतः॥ येनाति
व्रज्य त्रिगुणं मद्भावायोपपद्यते॥२०३॥ चौ०॥ भुक्ति मुक्ति इछा है जौलौं॥ भक्ति उदय हिय होइ न तौलौं॥ प
रम पिसाची इछा जोई॥ वढन न देत भक्ति सुख सोई॥ तत्र वाक्यं॥ श्लो०॥ भुक्ति मुक्ति स्पृहा यावत् पिशाची

वारवारइहिपढैविचारी॥हैसुखदायकअरुअघहारी॥संततसनाअआदरइहिवा॥ ...पनम
५५॥नक्तिप्रयोजनजिनकेहोई॥असेसाधुहोइजेकोई॥तिनकेमननमैंरुचिकोंनेकने ... ावडु
तवनयाकौ॥करिहैसदाविमलहियजाकौ॥जिनकेजुक्तिविचारअनेक॥२५६॥वाह ...
२५७॥शाबृग्यांनहैनक्तिविहीनां॥असेजनरकोउककविधिकीनां॥सोउआदरकनयकिरै ...नमईवेलग
हितसौंवकुतेरा॥२५८॥गेमगंमतेवचननिहारी॥लिखनकियउमैंहृदयविचारी॥महष्मीअली ह
करिमोपरै॥अवलोकनकरिहैकरुणांकरै॥२५९॥औरकोउजेअसदनत्रानी॥परकृतिहैनहिसुर
षोनी॥असीनिंदाकरजेकोउ॥जाचौंतिनहिजोरिकरदोउ॥२६०॥वेसवमहिमोवारहिवारा॥टे
षोनी॥असीनिंदाकरजेकोउ॥ ... ॥२६१॥नक्तअधी
तुनसुमतिउदारा॥सकलदोषितवदुषनदीजे॥इतनीविनयमानिममलीजै॥२६१॥नक्तअधी
तिगाये॥किंहिसतसंगतिकृलनयाये॥नक्तनकोजोस्वांगवनावे॥ताहृकृत्नसयअपनावे॥
कृपालतासमरथन्तूरी॥कृत्नदेवकीरतिअतिरूरी॥अहोलखौअचिरजयहनाई॥घातकरन
अाई॥२६३॥नाइछरोजमहाविखनारी॥पोनकरावततनछिनतारी॥दुष्टाअधमपूतनानाम
गतिदीनीगिरधारी॥२६४॥दोहा॥नक्तवेषकेमात्रतेंदईपरमेंगतिताहि॥असोकोंनकृपाल ...रस

ता० चं० ता० चं०

२७ ३१

गावैं नर जाहीं ॥२६५॥ चौ० ॥ इहि तें शरण कृपाल की गहई ॥ नरक कुल्यों न सकल तव लहई ॥ त्रिवि
धि तन तन धारी ॥ सहत घोर संसृति दुख नारी ॥ २६६ ॥ तासु ताप वारन हित नीको ॥ हरि पद जुग ॥श्री
वहीं को ॥ केवल ताप मात्र नहि हरई ॥ अमृत वृष्टि चहुं दिसि तें करई ॥ याते छत्र रूप हरि च ताजा
सरण सुखप्रद नय हरण ॥ २६७ ॥ छंद ॥ मैं ग्रसित आपद अति जुगल नर यार्द्दि हे करुणा करा रूषा
को न रूप स्यो मैं निज कर्म वस बहु दुख भरा ॥ संचित अविद्यातादि वस परित स्यो मैं बहु वि ॥२००॥
इहि हेतु क बहु कै सैं कुं शांति किंचित नहि लहौं न दनं दहे ॥ तुम सो शरण कृपाल तुत व पद रहि
सुख कंद हे ॥ गत शोक सब सुख ओक तव पद कंज सरण गत लह्यो ॥ बहु कूर कपटी खल ना॥
सब जिनि जिनि गह्यो ॥२६८॥ श्लोक ॥ गीतं सर्वेषु राणैः सन्माहात्म्यं वदेतकः सर्ई धि विनिर्मुक्तं तस्यर
किंचित्किंचिन्मया प्युक्तम् ॥२६९॥ चौ० ॥ सार चंद्रिका यह जु सुहाई ॥ उर न न सामीप्य सारूप्यैकत्व
अजुलनायाय प्रकासा ॥ संत चकोर नि नयो हुलासा ॥२७०॥ सुमति कुमोदिनि कअदाहृतः ॥ येनाति
मय अमृत वरसै ॥ तिमिर विमुख तासय न सावै ॥ दंपति रूप अनूप दिखावैं यहियहोइनतोलो ॥ प
हाई ॥ न क्त न की महिमा सुन गाई ॥ अहो किशोरी यह वर दीजे ॥ संत सम क्तिस्पृहा यावत् पिशाची

॥२७॥

श्वर्य हि साजे ॥ सदा चतुर भुज रूप विराजैं ॥२२२॥ शुद्धा रति कौ यह सु भावा ॥

वा ॥ ईश्वरता नंदनंदन करई ॥ ताकौ व्रजजन हिय नहि धरई ॥२२३॥ ईश्वरता कौं नैकु न म

भाव मांहि छकि रहें ॥ सो तिदास्य रति वारे जे जनै ॥ तिन हि ऐश्वर्य ह उदीपनै ॥२२४॥ वा

मैं जे अनुरागे ॥ पगे मधुर रस तिहि के आगे ॥ ऐश्वर्य तासं को चहि पाई ॥ जानै न जाय किरै ... मई वेलव

२२५॥ वसुदेव देवकी के हिय मांही ॥ शुद्ध वात्सल्य फलकत नांही ॥ ऐश्वर्य जु तवा त्सल्य प्रकासे ॥ शु ... ली ह

हिय न हि भासे ॥२२६॥ मार्‍यो कंस कुल सुख धांमों ॥ मातु पितु हित वकी पोषनो मो ॥ तव होत नितरसं ... वि

नी ॥ पुरुष प्रधान कृष्ण एद जांनी ॥२२७॥ श्री भागवते दशम स्कंधे ॥ श्लो० ॥ देवकी वसुदेवश्च विज्ञाय जगद्गु ... नी

कृतसं वंदनौ पुत्रौ सस्वजाते न शंकितौ ॥२२८॥ चौ० ॥ सख्य भाव अर्जुन हि हिये है ॥ तद पि सख्य ऐश्व

विश्वरूप लखि संका मांनी ॥ सख्य भाव तजि महिमा वखांनी ॥२२९॥ गीतायां ॥ श्लो० ॥ सखेति मत्वा प्र

हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥ अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात्प्रणयेन वापि ॥२२९॥ चौ० ॥

ये मधुर रति वसे ॥ पै ऐश्वर्य लियर तिनसै ॥ कृष्ण की योपरिहास न जान्यो ॥ वि कृष्ण मई हिय न ये मांधो

न जूरस

ता०च
:२७ १०चं०
२९

केवल शुद्ध प्रेम जहां होई॥ तहां ऐश्वर्य गंध न हि कोई॥ कृष्ण ऐश्वर्य देषि व्रजपरिकर॥ करत न है श्री
पलतर॥२३१॥ जसुमति सुत मुख विश्व जु देख्यो॥ तदपि कछु न ऐश्वर्य विसेख्यो॥ यही विचार कियौ जा
तांही॥ रोग रोग कछु सुत मुख मांही॥२३२॥ केसे भ्रम मेरे ही मन को॥ कछु ऐश्वर्य न गन्यौ ललनःरुषा
विना सब त्रिलोकी त्यागा॥ कृष्ण चरण मधि दृढ अनुरागा॥२३३॥ शांत भक्त कौ लक्षण यहै॥ कृष्णल ॥२००॥
रन च है॥ स्वर्ग मुक्ति सुख विविधि विधाना॥ तजै इन हि गनि नर्क समाना॥२३४॥ षष्ट स्कंधे॥ श्लो०॥ ना
परा सर्वे न कुतश्चन बिभ्यति॥ स्वर्गापवर्ग नरकेष्वपि तुल्यार्थदर्शिनः॥२३५॥ चौ०॥ पूरण ऐश्वर्य ग्यान
होंइ दास के लक्षण है सु जानो॥ ग्यान मे संभ्रम गौरव होई॥ सेवा करे कृष्ण पद सोई॥२३६॥ दास्यरस मां हि दोइ ग
नौं॥ सोई विधि लिखि प्रगट प्रमानौं॥ सख्य मे दृढ विश्वास लषावै॥ सखा कंधपर चढै चढावै॥२३७॥ प्यार
ए सेवा सुख पावै॥ कृष्ण तै सेवा सखा करावै॥ यह सख्यरस को कह्यो धर्म॥ सखा भक्त ते जानै मर्म कृष्ण
ममता अधिक जो निश्शहि रस है॥ यातै कृष्ण सख्य तो न सहै॥ वात्सल्य आप हि पालक मानै॥ कृष्ण ति
त्र निज जानै॥२३८॥ यामे चारयोंरस गुण वस ही॥ वात्सल्यरस तु बढ्यि यहि तल सहीं॥ वैतोत्तो॥ प
रस रसमय॥ कृष्ण निष्ठा से वा रति अतिसय॥२४०॥ सख्य धर्म संकोच न आनै॥ कृष्णर्या वत् पिशाची

वात्सल्यधर्म यह दरसाई॥ कृष्णमांहि ममता सरसाई॥२४१॥ कांत भाव पिय कौं जिय अर्पै॥ ... नम
मर्पै॥ सेवै सरस नेह अनुरागी॥ ता सम और कौं न वडभागी॥२४२॥ जांनै जु कोउ मधुर रस म... विकु
या मधर्मी॥ जसै एक हि गुण आकासा॥ पृथ्वी मधि गुण पां च प्रकासा॥२४३॥ त्यौं ही जांनि मधुर... मई वेलव
पांचौं रस तिहि मे दरसांही॥ ऐसैं करत नांव नांउ रमै॥ कृष्ण वसै तिहि के उर पुर मै॥२४४॥ कृष्ण कृप
ससागर॥ आस्वादन करि है जन नागर॥ सकल रसन कौ यहै निकेता॥ कीनों रसिक जनन के हेता॥ रसिक अली ह
पद रज सिरधारी॥ सोइ हि रस कौ है अधिकारी॥२४५॥ हे श्री कृष्ण तुमै जु या जिय परे॥ कीनी कृपा ता सु कासर नि
जो उपकार कियो नंदनंदन॥ ता को बदलो दैन यहै जन॥ ब्रह्मा तुल्य आरवल पाई॥ भजन करै ते री
न जाई॥ तुम उपकार जु कीयो अनंता॥ तिहि सुमिरण करि हौ किर दे संता॥ वा हरि धरि आचारि
त कृपा घनस्याम स्वरूपा॥ मंत्र देइ अपनौं करि लेहु॥ सिखा देत करत अति नेहु॥ भक्ति दांनं ध
रो॥ इहि विधि परम अनुग्रह धारो॥ अंतरजामी रूप हि करि कैं॥ अपन प्रापति बुधि विस्तरि कैं॥
मति रति सरसावो॥ निज परिकर मैं निकट वसावो॥ एकादश स्कंधे श्री कृष्णचंद्र प्रति उद्धव वाक्यं॥ ताधार
न जूरस

सां० चं०
२७

सां० चं०
२० ३०

वोपयं त्यपचिति कु वयस्तवेशावुह्याखुषोपि कृतमद्द मुदः स्मरंतः॥ योऽनवेद्दिस्तनुद्दतामस्तुनं द्वि श्री
चार्य्यचेत्यवपुषा स्वगतिं व्यनक्ति॥२४६॥ चौ०॥ गीतामैं कह्यो हरि मुख वांनी॥ सोयखौं नक्ति निर्धा जा
ऐसी बुद्धि दें उं मैं जातैं॥ अनायास मोहि पावत तातैं॥ या सिद्धांत सौं यह जो नियें॥ गुरहि सुषा
मानियें॥ गीतायां॥ श्लोक॥ तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकं॥ ददामि बुद्धियोगं तं येन ॥२००॥
ति ते॥२४७॥ चौ०॥ तातें करि यरसिक जन संगा॥ तब राचइं हिसुख के रंगा॥ यह रसलीला मंग
शास्त्र प्रमान जथामति वरनी॥२४८॥ मंद हीन अतिहौं मति अंधा॥ नक्ति लेस कोनाहिन गंधा॥ यह
सिंधु अमृत को सारा॥ ताको कसें पाउं पारा॥२४९॥ जसैं मसक उडाय अकासू॥ कवकुं पार न पावत ता
सें ही मे मन हि चलायो॥ जथा बुधि जस कछु इक गायो॥२५०॥ रसिकन की कीरति रस सारा॥ कही जा
अकथ अपारा॥ लिखौं वरष सत दिन अरु राती॥ तौउ मो पैं कही न जाती॥२५१॥ जो महिमां कछु लव
रा॥ वह गंथ न हि आवैं छोरा॥ तातें इति इक लिखी वनाई॥ लियो आपनौं मन समकाई॥२५२॥ जे
धियह मम जीहा॥ कहे संत गुण तजि जग ईहा॥ रसनां पाय कृष्ण गुन गांनों॥ नहि त चौरे तौ लिनो॥ प
यह धारि मन दृढ विश्वासा॥ हरि हि गाइ कै हरि के दासा॥ याहि हेत तें मैं जिय जांनी॥ स्वित पिशाची

जिनकेहियहरिभक्तिकीमहिमाकोहैग्यांन॥तेहीकरिहैग्रंथको ~ मोदपायसनम

दसशततिहिऊपरसैंतीसजांनिये॥सऊनजनसुबरांनियेहैसंवतवर्षांनिये॥मार्गशीर्षसु

शुक्लासुखकरनी॥मंगलमंगलवारसुतिथिदुतियामनहरनी॥यहसाराचंद्रिकारसमईवेलव

नधरी॥अलीकिशोरीगुरूकृपापाइगाइपूरणकरी॥२७४॥इतिश्रीसारचंद्रिकाकिशोरीअलीकृ

दोहा॥अमृतसाररसचंद्रिकाहरिजनविमलमयंक॥खेमदासकीआससइहजसलिखिहोइनि

रागविहाग॥होंइनरसिकनकीवलिहारी॥श्रीवृंदावननवनिकुंजमेंदंपतिकेलि

वंसीश्रीहरिदासीसर्वोपरिसरासी॥विठलविपुलव्यासध्रुवनागरीदासविहारिनि

रिव्याससेवकजेवसकरिप्रीतमप्यारी॥आगनितजीवनपरकरुणांकरिकियमहलअधि

दासदामोदरवल्लभरसिकरंगेरसरैंनी॥गदाधररामरायभगवांनरीतिसुखदेनी॥

सखीसदानंदनंददासरसगायो॥सूरदासश्रीमदनमोहनजूजुगलहितनेलडायो॥५॥माधो

रघुनिसूरहिमस्तकनाऊं॥नरसीमहतामीरांदिकजेतितनकीकृपामैंनाऊं॥६॥रूपसनातनजूरस

सा०च
२७

सा०बा०चे०
२। ३५२

चितदीनौं॥ प्रगटकरी ग्रंथनकी रचना वास त्रिभुवनकौं कीनौं॥७॥ श्रीपरमानंददास चतुरभुज गोविंद
सनेही॥ कृष्णदास चीतस्वामी जू व्रजरस गाइक यही॥८॥ सिया राम अभिराम नाम के तुलसी
...नीनौं॥ रामप्रसाद प्रसाद पाइकै प्रगट्यो सुजस नवीनौं॥९॥ ललित के शोरी रूपरसिक व... जी
श्रीवंसी अलि ज्ञ गुरु भजि हौं राधा सुजस रसीले॥१०॥ जे जे रसिक उपासिक तिनकी पद र... पा
कृपा सुदृष्टि किशोरी की नित के लिनि हारौं॥११॥ हौं इनि रसिकन मोल लियो अपनी कृ... यो॥२०॥
द दास कीयो॥ खैंचि लियो संसार सिंधु तें श्रीवन धाम दीयो॥ अधम कूं धनिक हाय के श... नाम ग... गधा॥ यद
॥१२॥ इति श्री सारचंद्रिका संपूर्ण॥ समत १८४५ का पोस सुधि ११ लखतं वैष्णव पोकरदा
ऊलीः श्री रघुनाथजी का मंदर मध्ये स्वपठनार्थं तत्रापि बांचवे चार जनु को जय सीताराम
बांचज्यो: श्रीरामानुजाय नमः॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥

मकारो

रकारोच्चारणादेव मुखान्निर्जातिपातिकं॥ पुनः प्रवेशभीत्वैव मकारस्य ... तोलो॥ प
...त् पिशाची